



# नवरंग

वार्षिक पत्रिका:

वर्ष: 2025

अंक : 1

# दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मेरठ

एन0एच0 58 परतापुर बाईपास दिल्ली रोड, मेरठ, उ0प्र0  
पिन—250002 फोन: 0121-2440315, मो0- 7055562224  
Website: <https://dce.dewaninstitutes.com/>

## नवरंग...

(वार्षिक पत्रिका - २०२५)

मुख्य सम्पादक  
डॉ. मुनेन्द्र कुमार

सम्पादक:  
श्री पुष्पेन्द्र कुमार ठाकुर  
श्रीमती ऋचा

©

सुरक्षित मुख्य सम्पादक

प्रथम संस्करण: 2025

मुख्य सम्पादक : डॉ० मुनेन्द्र कुमार (प्राचार्य)

पता : दीवान इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज्  
परतापुर बाईपास , मेरठ उत्तर प्रदेश -250103

मोबाईल : 7055562224 , 9897026152

ई-मेल : principalbed@dewaninstitutes.org

वेबसाइट : <https://dce.dewaninstitutes.com/>



## सम्पादक मण्डल

मुख्य सम्पादक



डा. मुनेन्द्र कुमार (प्राचार्य)

सम्पादक



पुष्पेन्द्र कुमार ठाकुर  
(सहायक आचार्य)



ऋचा  
(सहायक आचार्या)

कार्यकारी समिति



ज्योति पुंडीर



डॉ. सुजा जी. स्टेन्ले



मनोज कुमार



धरमवीर सिंह



डॉ. राहुल गुप्ता



मीनु सचदेव



राजीव कुमार



## संदेश



**“एक हजार मील सफलता की यात्रा की शुरुआत भी एक कदम से ही होती है।”**

मैं एक राष्ट्र की उन्नति और भविष्य की आशा के स्तंभ के रूप में युवाओं को तैयार करने के हमारे लक्ष्य पर जोर देना चाहता हूँ। हमारी संस्था का गठन एक उद्देश्य को लेकर किया गया था, जो कि शिक्षा और संस्कृति को बढ़ावा देना था ताकि हम जिस लक्ष्य में विश्वास करते हैं उसे प्राप्त कर सकें।

मुझे यह जान कर बहुत खुशी हो रही है कि दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन कॉलेज पत्रिका "नवरंग" का वार्षिक अंक प्रकाशित कर रहा है। हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और करियर प्रदान करने में एक प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। हमने आधुनिक युग के छात्रों के लिए वर्तमान शिक्षा की जरूरतों की पहचान की है, जिसमें पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ एक दृष्टि और लक्ष्य है जो हमें अपने प्रतिस्पर्धियों से भी आगे रखता है। मैं "नवरंग" के संपादकीय बोर्ड को बधाई देता हूँ जो सभी पहलुओं में सर्वश्रेष्ठ काम कर रहे हैं।

इस संस्था के अध्यक्ष के रूप में, मुझे छात्रों और अभिभावकों की पूर्ण भागीदारी और सहयोग की आशा है, जिससे हमारे लिए उन उद्देश्यों को प्राप्त करना संभव हो सके जिसके लिए हमारी संस्था पिछले कई वर्षों से कार्यपरक योजना को लेकर काम कर रही है। मुझे विश्वास है, यह पत्रिका हमारे कॉलेज के समग्र विकास में योगदान प्रदान करेगी।

**विवेक दीवान**

**अध्यक्ष**

**दीवान वी. एस. ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस**

**मेरठ-250103 (उत्तर प्रदेश)**

## संदेश



**"शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसे आप दुनिया को बदलने के लिए उपयोग कर सकते हैं।"**

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन अपनी वार्षिक पत्रिका "नवरंग" का प्रकाशन कर रहा है। दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन अपने छात्रों के मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। हम ज्ञान में निरंतर वृद्धि का प्रयास करते हैं जो कि निर्धारित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कक्षा-कक्ष से बाहर की दुनिया को भी शामिल करता है। ज्ञान मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व रखता है क्योंकि यह मनुष्य को उसकी सफलता से परिचित करवाता है, और उसे समाज में एक बेहतर इंसान भी बनाता है।

कोविड 19 की त्रासदी के पश्चात शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों ने कठिनाइयों और सीमाओं के बावजूद मौजूदा शिक्षा प्रणाली में बदलाव का मार्ग प्रशस्त किया है एवं इन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करते हुए अनेक उपलब्धियों प्राप्त की हैं। मैं उन सभी को बधाई और शुभकामनाएं देना चाहता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए कड़ी मेहनत की है तथा कामना करता हूँ कि यह पत्रिका यादों का खजाना बनी रहे।

**डा. नरेश गोयल**

**कार्यकारी निदेशक**

**दीवान वी. एस. ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस**

**मेरठ-250103 (उत्तर प्रदेश)**

## संदेश



“ सा विद्या या विमुक्तये “

‘सा विद्या या विमुक्तये’ – यह सूक्ति हमें स्मरण कराती है कि वास्तविक शिक्षा वह है जो जीवन के बंधनों से मुक्त कर अपने कर्तव्यों और सामाजिक उत्तरदायित्वों की ओर प्रेरित करे। भारतीय ज्ञान की परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्धतम परंपराओं में से एक है, जो केवल सूचना तक सीमित न होकर जीवन जीने की एक समग्र दृष्टि प्रदान करती है।

“नवरंग” का यह अंक न केवल हमारे शिक्षण संस्थान की सृजनात्मक गतिविधियों का दर्पण है, अपितु यह हमारी ज्ञान परंपरा की जीवंत झलक भी प्रस्तुत करता है। मैं अत्यंत हर्षित हूँ कि हमारे बीएड के छात्र-छात्राओं एवं संकायजनों ने इस परंपरा को आत्मसात करते हुए नवरंग पत्रिका के माध्यम से नवाचार, शोध, और सृजनात्मकता को एक मंच प्रदान किया है। यह प्रयास न केवल शैक्षणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक चेतना को भी पुष्ट करता है।

मैं सम्पूर्ण नवरंग टीम को इस उत्तम प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि यह पत्रिका आने वाले समय में शिक्षकों के निर्माण और मूल्यपरक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में एक सशक्त माध्यम सिद्ध होगी।

डॉ. श्रुति अरोरा

मुख्य सलाहकार

दीवान वी. एस. ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस

मेरठ-250103 (उत्तर प्रदेश)



## संदेश



**“ज्ञान मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व रखता है क्योंकि यह मनुष्य को उसकी सफलता से परिचित करवाता है और उसे समाज में एक बेहतर इंसान भी बनाता है।”**

नया ज्ञान नवरंग और अनुप्रयोग पर निर्भर करता है। नए ज्ञान का नवरंग केवल नवीन विचार और कौशल युक्त शिक्षित व्यक्ति ही कर सकते हैं। उन्नत व नवीन ज्ञान और कुशल कौशल के साथ ऐसी जनशक्ति का उत्पादन हमारी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है। वर्तमान शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा के सभी पहलुओं अर्थात शिक्षा के लक्ष्य/उद्देश्य, संरचना और शैक्षणिक संस्थानों के प्रकार, पाठ्यक्रम आदि में हमें उपयुक्त परिवर्तन करने की आवश्यकता है। इस दिशा में हमारी शिक्षा प्रणाली और हमारे देश को चलाने की जिम्मेदारी हम सभी के कंधों पर है।

दीवान इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (कॉलेज ऑफ एजुकेशन) का उद्देश्य भावी शिक्षकों को उस ज्ञान से परिपूर्ण करना है जिसके परिणामस्वरूप शैक्षिक विशेषज्ञता व तकनीकी कौशल से युक्त शिक्षक तैयार हो सकें। जो जीवन में उच्च कोटि का प्रदर्शन कर सकें तथा आजीवन सीखने और खोज के लिए तैयार रहें।

पत्रिका, “नवरंग” समाज में हमारे संस्थान की छवि प्रस्तुत करती है। यह हमारे शिक्षकों और छात्रों को तर्क और विचारों की स्पष्टता के साथ रचनात्मक लेखन के अवसर प्रदान करता है। हम अपने शिक्षकों और छात्रों के हमारी पत्रिका में उनके रचनात्मक कार्यों एवं विश्वास के लिए उनके आभारी हैं। हम सम्बंधित व्यक्तियों से निरंतर समर्थन तथा मार्गदर्शन की अपेक्षा करते हैं और उन सभी व्यक्तियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं जो सदैव हमारा साथ देने के लिए तैयार रहते हैं।

**डा. मुनेन्द्र कुमार**

**प्राचार्य**

**दीवान इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज**

**मेरठ-250103 (उत्तर प्रदेश)**

## संदेश



**"कलम की ताकत से जब मिलता है समर्पण, तो हर शब्द एक नई कहानी का आरंभ होता है"**

नवरंग पत्रिका का यह संकलन प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है जो न केवल हमारे महाविद्यालय के जीवंत चित्रपट को दर्शाता है बल्कि रचनात्मकता, जिज्ञासा और समुदाय की भावना का भी प्रतीक है जो हमें परिभाषित करता है।

यह पत्रिका हमारे प्रतिभाशाली योगदानकर्ताओं की कड़ी मेहनत और समर्पण का प्रमाण है, जिन्होंने इन पृष्ठों की शोभा बढ़ाने वाले लेखों, कहानियों और कलाकृतियों की विविध श्रृंखला में विभिन्न समसामयिक मुद्दों पर विचारोत्तेजक अंतर्दृष्टि और अनुभवों के सार को चित्रित किया है।

इस पत्रिका में, आपको छात्र जीवन, पढ़ाई और छात्रों द्वारा कक्षा के बाहर किए जाने वाले सभी अच्छे कामों के बारे में दिलचस्प कहानियाँ मिलेंगी। हम यहां सिर्फ आपको बातें बताने के लिए नहीं हैं; हम जो साझा करते हैं उस पर आपको उत्साहित और गौरवान्वित कराना चाहते हैं। हमें उम्मीद है कि यह पत्रिका सभी को एक साथ लाने में मदद करेगी और सभी को एक-दूसरे को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगी।

इस पत्रिका को एक साथ लाने वाले सभी लोगों - संपादकों, लेखकों, छात्रों और कड़ी मेहनत करने वाले सभी लोगों को बहुत-बहुत धन्यवाद। आपको एक सुखद और समृद्धि भरा पठन अनुभव करने की शुभकामनाएँ।

**पुष्पेन्द्र कुमार ठाकुर**

**सहायक आचार्य**

**दीवान इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (शिक्षा विभाग)**

**मेरठ-250103 (उत्तर प्रदेश)**

## संदेश



**“शिक्षा किसी भी व्यक्ति के साथ-साथ एक बेहतर समाज के निर्माण में सहायक होती है”**

सृष्टि का नियम है निरंतर चलते रहना। यहां नित नई चीजों का निर्माण होता है, उनमें गति आती है और फिर वह अनंत में विलीन हो जाती है। यह क्रम निरंतर चलता रहता है। एक छोटे से बीज से एक विशालकाय वृक्ष का जन्म होता है। प्रकृति में चारों ओर सभी कुछ ना कुछ नया निर्माण कर रहे हैं। पक्षी कभी अपना घोंसला बनाते हैं, मधुमक्खी फूलों का रस पी के मधु का निर्माण करती है, प्रकृति में चारों तरफ अनगिनत रंग भरे हुए हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि छोटे से छोटा कण भी इस सृष्टि में अपना कोई ना कोई कर्म करके सृष्टि में अपना योगदान दे रहा है। मानवता का धर्म सर्वोपरी है, यही वह धर्म है जो मानव सभ्यता को प्रत्येक त्रासदी से निकलकर आगे बढ़ाता है। इस सदी की एक विकट त्रासदी, कोविड महामारी से हम सभी ने सामना किया है, तथा इससे लड़कर हम सभी आगे बढ़े हैं।

हमारे संस्थान के छात्र-छात्राओं ने भी अपनी कलम से कुछ ना कुछ नए रंग भरने की क्षमता दिखाई है। यह पत्रिका दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन के विद्यार्थियों द्वारा संकलित कविताओं, कहानियां तथा लेखों का संग्रह है। आशा करते हैं कि यह कार्य निरंतर इसी प्रकार उत्साह के साथ आगे चलता रहेगा। मैं संपादकीय टीम, लेखक, कलाकारों, और इस पत्रिका को जीवंत बनाने में शामिल सभी जनों के प्रति हृदय से आभारी हूँ।

**ऋचा**

**सहायक आचार्या**

**दीवान इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (शिक्षा विभाग)**

**मेरठ-250103 (उत्तर प्रदेश)**



## अनुक्रम

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1	शिक्षक: ज्ञान का दीप	डॉ. मुनेन्द्र कुमार	1
2	बेटी	श्री पुष्पेन्द्र कुमार ठाकुर	2
3	भारत में जातिविहीन समाज की आवश्यकता	श्रीमती ऋचा	3
4	मंजिल हो ऐसी	श्रीमति ज्योति पुंडीर	5
5	उभरती सूर्य की रश्मियां	श्री धर्मवीर सिंह	6
6	जीवन में कुछ करना है तो	मानसी	7
7	रक्षकों को नमन	अंजली सूद	7
8	कन्यादान	पूजा	8
9	कुछ ऐसे भी लोग हैं	रजत वर्मा	9
10	कर्मवीर	सुमित पाल	10
11	मानसिकता	डॉ० राहुल गुप्ता	11
12	विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ	संकलन	12
13	अनमोल वचन	श्री योगेश शर्मा	16
14	हिन्दी क्यों स्वीकार्य है?	श्री राजीव कुमार	17
15	माँ रेशम का तारा	सृष्टि	20
16	नारी पीडा	प्रशांत	21
17	यथार्थवाद	भावना त्यागी	22
18	मेरा देश महान	काजल	23
19	दोस्ती की मिसाल	मुस्कान	23
20	विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ	संकलन	24
21	माँ	रूपल	28
22	जीवन की अविरल धारा	यशस्वी	28
23	भजन	प्रियंका रानी	29

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
24	माता-पिता ईश्वर का दूसरा स्वरूप	शिवानी गोस्वामी	30
25	प्रार्थना	वर्षा सैनी	30
26	नकल करना बुरा है	प्रीती सागर	31
27	आश्चर्यजनक किन्तु सत्य	ऋतुराज	31
28	व्यवहार का मीठा होना	भारती रानी	32
29	पैसे की सीमा	अदिति	32
30	देवि! हिन्दी	प्राची	33
31	व्यग्न्य	वीरेन्द्र कुमार	35
32	चुटकुले	निर्मल कुमार	36
33	ग्यारह सत्य अजर अमर	केशव मित्तल	36
34	नारी	राखी	37
35	जीवन अनमोल	स्मिता	37
36	गजल	खुशी वात्स्यान	38
37	जरा देर और ठहर जा	प्रिंसी जैन	38
38	विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ	संकलन	39
39	बेरोजगारी	आकांशा	42
40	क्लास मॉनीटर	राशि	42
41	नेता	दीपांशी	43
42	मेरा लक्ष्य	हर्षिता	43
43	पंचतंत्र की कहानी - मूर्ख साधू और ठग	अक्षय शर्मा	44
44	अकबर बीरबल की नोक-झोंक	अंजलि रानी	45
45	गांधीजी का अंतिम दिन - स्टीफन मर्फी	कंचन कुमारी	46
46	काला रंग	अनु	48
47	हिमालय	भाविक चौधरी	48
48	हे धरा ये पृथ्वी	फिरोज़ां यूनस	49

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
49	Corona Virus Pandemic	Mrs. Meenu Suchdava	50
50	Victimhood	Mr. Manoj Kumar	52
51	Education Without Moral is Like a Ship Without a Compass	Dr. Suja George Stanley	54
	पुरातन छात्रों की कलम से		57
52	जरूरी में जरूरी	अक्षिता त्यागी	58
53	नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जीवन-परिचय	मन्नत जैन	59
54	वृक्षों से सीखो	आरोही	61
55	सफलता की मंजिल	हिमांशी तोमर	62
56	वक्त नहीं	वंशिका शर्मा	62
57	लहर नहीं जहर हूँ मैं	प्रभा कर्दम	63
58	नारी होने का पुरस्कार	स्वाति बंसल	64
59	निर्बल की सहायता धर्म है	नीतू गोस्वामी	67
60	कहानी - खोखले चमत्कार	शुभम	69
	पुरातन छात्रों के अनुभव		71



## शिक्षक: ज्ञान का दीप

ज्ञान के दीप जलाते हैं,  
अंधकार को मिटाते हैं।  
पथभ्रष्ट को राह दिखाकर,  
जीवन को संवारते हैं।



डॉ० मुनेन्द्र कुमार  
(प्राचार्य)

सपनों को पंख देते हैं,  
संस्कार हमें सिखाते हैं।  
संघर्ष के मायने समझाकर,  
हमें नई दिशा दिखाते हैं।  
कभी कठोर, कभी सरल,

जीवन के हर रंग सिखाते हैं।  
हमारे भविष्य के शिल्पकार,  
शिक्षक हमें गढ़ जाते हैं।

हर शब्द में छिपा है प्रकाश,  
हर सीख में छुपा है इतिहास।  
हे गुरु, तुम्हें शत्-शत् नमन,  
तुम हो हमारे जीवन का आस।



शिक्षक दिवस पर यह वादा,  
हम चलेंगे तुम्हारी राह।  
ज्ञान का दीप जलाएंगे,  
करेंगे तुम्हारा सपना साकार।



## बेटी



श्री पुष्पेन्द्र कुमार  
सहायक आचार्य

बेटी है एक अहसास , खुदा का  
बेटी है प्यार , बाबुल का  
बेटी है सम्मान , माँ-बाप का  
बेटी है आधार , इस धरा की  
बेटी है नाम , कल्याण का  
बेटी है रूप , दुर्गा का  
बेटी है खुशबू , जन्नत की  
बेटी है पूजा , भगवान की  
बेटी है तितली , आँगन की  
बेटी है दुआ , रहमत की  
बेटी है मूरत , विश्वास की  
बेटी है रक्षक , संस्कृति की  
बेटी है जननी , ईश्वर की  
बेटी है भक्षक, बुराई की  
बेटी है पूर्णता , परिवार की।



## भारत में जातिविहीन समाज की आवश्यकता

‘क्या होगी छत की ऊँचाई, जब छत का आधार नहीं।  
कैसी जाति, कैसा मजहब, जब आपस में प्यार नहीं।’



श्रीमती ऋचा  
सहायक आचार्या

हमारे भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की जड़ें बहुत गहरी हैं। इस व्यवस्था में एक वंशानुगत समूह होता है जो अपनी सामाजिक स्थिति को परिभाषित करते हैं। प्राचीन काल में भारतवर्ष में एक व्यक्ति की जाति उसके व्यवसाय को परिभाषित करती थी, जो कि जीवन भर वह व्यक्ति करता था। जाति प्रथा में बेटा पिता के व्यवसाय को अपनाता है और इस व्यवस्था में व्यवसाय के परिवर्तन की सम्भावना बहुत कम हो जाती है। आम तौर पर जाति व्यवस्था हिंदू धर्म से जुड़ी हुयी है।

ऋग वेद (प्रारंभिक हिंदू साहित्य) के अनुसार मनुष्यों के चार वर्ग थे जिन्हें ‘वर्ण’ कहा जाता था। ये क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होते थे। अधिकांश इतिहासकार आज भी मानते हैं कि आज की जाति व्यवस्था इन वर्णों पर आधारित है। इसके अलावा एक पाँचवीं श्रेणी भी मौजूद थी जो शूद्रों से भी कमजोर मानी जाती थी और वह “अछूत” या दलित होते थे। ये वे व्यक्ति थे जो मलमूत्र या मृत पशुओं को हटाने और साफ करने का कार्य करते थे। इसीलिए उन्हें मंदिरों में प्रवेश करने और एक ही जल स्रोत से पानी पीने आदि की अनुमति नहीं होती थी। लेकिन कब और कितनी जातियां भारत में उत्पन्न हुई हैं, यह स्पष्ट नहीं है।

जाति व्यवस्था की उत्पत्ति के संबंध में कई सिद्धांत दिये गए हैं लेकिन अब तक इस संबंध में कोई ठोस सबूत नहीं मिला है।

हालांकि समय के साथ कई चीजें बदल गई हैं और जाति व्यवस्था भी बदल चुकी है लेकिन फिर भी यह विवाह और धार्मिक पूजा जैसी जीवन की प्रमुख घटनाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आजादी के इतने सालों के बाद भी जाति पर आधारित भेद-भाव आज भी होता है। अब शहरी इलाकों में यह सब इतना स्पष्ट नहीं है लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न जातियों में अंतर स्पष्ट दिखता है।

शहरी मध्यवर्गीय परिवारों में जाति व्यवस्था महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन यह विवाह के दौरान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कभी-कभी जाति-आधारित अंतर अनेक रूपों में एक हिंसक मोड़ ले लेता है। इसके अलावा विरोधी सामाजिक तत्व अपने राजनितिक स्वार्थ को बढ़ावा देने के लिए भी जाति व्यवस्था का गलत उपयोग करते हैं।

आजादी की लड़ाई के साथ-साथ, स्वतंत्रता के बाद भी भारत में जाति-आधारित असमानताओं को खत्म

करने के लिए कई आंदोलन और सरकारी कार्यवाहियां भी हुईं। निम्न जातियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए गांधीजी ने निम्न जाति के लोगों के लिए 'हरिजन' शब्द (भगवान के लोगों) का प्रयोग करना शुरू कर दिया था। उन्होंने एक ही उद्देश्य के लिए एक अलग समूह बनाने की बजाय निम्न जाति के लोगों को सुधारने के लिए प्रोत्साहित भी किया। ब्रिटिश सरकार भी 400 समूहों की एक सूची के साथ बनाई थी जिन्हें अछूत के रूप में माना जाता था। बाद में इन समूहों को अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियों के रूप में जाना गया।

1970 के दशक में अछूतों को दलित कहा जाने लगा। 19वीं सदी के मध्य में महात्मा ज्योतिबा फुले ने निम्न जाति के लोगों की स्थिति का उत्थान करने के लिए दलितों के लिये आंदोलन शुरू किया। निम्न जाति के लोगों का समर्थन करने और उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने 1920 और 1930 के बीच एक महत्वपूर्ण दलित आंदोलन शुरू किया। उन्होंने भारत में दलितों की स्थिति सुधारने के लिए स्वतंत्र भारत में आरक्षण की एक प्रणाली भी बनाई। लेकिन आज भी आधुनिक भारत में अलग-अलग लोगों के बीच संबंध पूरी तरह से सुगम नहीं हो पाये हैं। कुछ विसंगतियाँ जैसे कि अलग-अलग जाति के बावजूद व्यक्तियों का एक जगह पर भोजन करना, पर्यटन स्थल पर जाना तो दूर हुई हैं, लेकिन फिर भी लोग अंतर्जातीय विवाह के खिलाफ हैं।

व्यवसाय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है क्योंकि अब यह जाति तक सीमित नहीं है। वर्तमान समय में व्यवसाय का चुनाव जाति आधारित न होकर

योग्यता आधारित हो गया है। शिक्षा के प्रसार से ही यह सामाजिक बुराई दूर की जा सकती है। यह खुशी की बात है कि इस व्यवस्था की जड़ें अब ढीली होती जा रही हैं। वर्षों से शोषित अनुसूचित जाति के लोगों के उत्थान के लिए सरकार उच्च स्तर पर कार्य कर रही है। संविधान द्वारा उनको विशेष अधिकार दिए जा रहे हैं। उन्हें सरकारी पदों और शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश प्राप्ति में प्राथमिकता और छूट दी जाती है। लेकिन आज भी राजनीतिक परिदृश्य से देखें तो चुनाव प्रणाली जातिगत आंकड़ों में सिमटती सी नजर आती है जो एक सफल लोकतंत्र के लिए अभिशाप प्रतीत होती है।

आज की पीढ़ी का प्रमुख कर्तव्य जाति-व्यवस्था को समाप्त करना है क्योंकि इसके कारण समाज में असमानता, एकाधिकार, विद्वेष आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। एक वर्गहीन समाज में आपसी बैर न होकर समाज की उन्नति पर ध्यान केंद्रित होगा। इससे भारत की उन्नति होगी और साथ ही देश समतावादी राष्ट्र के रूप में उभर सकेगा।



## मंजिल हो ऐसी



श्रीमती ज्योति पुंडीर  
सहायक आचार्या

अभी-अभी तो मनाया था मन तुझे  
और फिर तू बिखर गया  
एक ठेस क्या लगी  
देख फिर से तू ठहर गया ।  
अब राह बदलने की मत सोच  
एक जरा सी बात खुद से पूछ  
है कौन सी ऐसी राह  
जिस पर ठोकर लिखी ही नहीं  
फूल ही फूल बिछे होंगे,  
कांटों की चुभन ही नहीं ।  
जो विरासत में मिले  
वो कामयाबी कैसी  
तेरी ताकत की बदौलत  
हो चमक जहाँ....  
मंजिल हो ऐसी...  
मंजिल हो ऐसी ॥



## उभरती सूर्य की रश्मियां



श्री धर्मवीर सिंह  
सहायक आचार्य

उभरती सूर्य की रश्मियां, उगा तू खुद को जला के!  
'दीवान' खिला फूल तरह-तरह के,  
खुशबू अपनी सारे जग में फैला दें!!  
अनथक चले जा होंठों पे मुस्कान धर,  
ज्ञान, शिक्षा, विज्ञान, विधि, व्यापार की!  
कर दें न्यौछावर सर्व-संचित-सुधा  
थाम ले गरल-कंठ में, अमृत वर्षा करा दें प्यार की!!  
जान कर के खुद को तू  
खुद को चढ़ा उन्नति के शिखर पर!  
होड़ कोई तेरी क्या कर सकेगा  
तू कर अपने संस्कार-संस्कृति पे फक्र!  
मर्त्य हो चुकी ज्योतियां जो-  
उनको तू फिर से जिला दे!!  
'दीवान' की प्रतिभाएं,  
बदल दे जो भविष्य की रेखाएं!  
उठे हाथ तो करें दान-दया  
न तो मित्रता के लिए बढ़ा दें!  
'दीवान' खिला फूल तरह-तरह के,  
खुशबू अपनी सारे जग में फैला दें!!  
शिक्षा की रोशनी तू कर, अमृत वर्षा कौशल-विकास की !  
इस तरह सारे जग में जय हो दीवान की, जय हो दीवान की!!





## जीवन में कुछ करना है तो



मानसी पालीवाल  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

जीवन में कुछ करना है तो मन को मारे मत बैठो,  
नित-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो,  
चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है,  
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल होता है।  
पाँव मिले चलने के खातिर, पाँव पसारे मत बैठो,  
नित-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो,  
तेज दौड़ने वाला खरगोश, दो पल चल कर हार गया,  
धीरे-धीरे चलकर देखो, कछुआबाजी मार गया।  
चलो कदम से कदम मिलाकर, दूर किनारे मत बैठो,  
धरती चलती, तारे चलते, चाँद रात भर चलता है,  
किरणों का उपहार बढ़ाने, सूरज रोज निकलता है,  
हवा चले तो महक बिखरे, तुम भी प्यारे मत बैठो,  
नित-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो,  
जीवन में कुछ करना है तो मन को मारे मत बैठो।



## रक्षकों को नमन



अंजलि सूद  
बी. एड. प्रथम वर्ष

एक रोज़माँने बताया था कि तू बन्द मुट्ठी आया था  
जिस दिन तू दुनियाँ में आया था  
इक जोश सा मुझ में आया था।  
कुछ बड़ा हुआ तो कहने लगा माँ मैं तो फ़ौज में जाऊँगा  
घर की इन चार दीवारी में घुटकर मैं रह पाऊँगा  
लेकर सीने में चिंगारी सीमा पर परचम लहराऊँगा।  
सुन कर मेरी जोशीली बातें माँ ने हृदय मजबूत किया  
भेज लाल को सीमा पर माँ ने मेरी बलिदान दिया  
बाँध प्रेम को गठरी में माँ ने अश्रू को थाम लिया।  
चुन कर कुछ तसवीरें माँ की गठरी में मैं रख लाया था  
धीरे से आँचल छोड़ माँ का तब मैं सीमा पर आया था।  
फ़िर इक दिन मेरी जीत हुई सीमा पर तिरंगा लहराया  
फिर पहुँचा अपने गाँव तो माँ ने मुझको सहलाया।  
सहलाकर मुझको वो हैरान हुई पहले सवाल किये फिर  
मौन हुई  
वो इक रोज़ पहली थी, जब मैं कुछ न कह पाया  
वो लगाती रही मुझे सीने से अपने,  
पर मैं उसकी कोहली न भर पाया।





## कन्यादान



पूजा  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

कन्यादान हुआ जब पूरा, आया समय विदाई का।  
हँसी, खुशी सब काम हुआ था, सारी रस्म अदाई का।।  
बेटी के उस कातर स्वर ने, बाबूल को झकझोर दिया।  
पूछ रही थी पापा तुमने, क्या सचमुच में छोड़ दिया।।  
अपने आँगन की फलवारी, मुझको सदा कहा तुमने।  
मेरे रोने को पल भर भी, बिल्कुल नहीं सहा तुमने।।  
क्या इस आँगन के कोने में, मेरा कुछ स्थान नहीं।  
अब मेरे रोने का पापा, तुमको बिल्कुल ध्यान नहीं।।  
देखो अन्तिम बार देहरी, लोग मुझे पुजवाते हैं।  
आकर के पापा क्यों इनको, आप नहीं धमकाते हैं।।  
नहीं रोकते चाचा ताऊ, भैया से भी आस नहीं।  
ऐसी भी क्या निष्ठुरता है, कोई आता पास नहीं।।  
बेटी की बातों को सुनके पिता, नहीं रह सका खडा।  
उमड़ पड़े आँखों से आँसू, बदहवास सा दौड़ पड़ा।।  
कातर बछिया सी बेटी, लिपट पिता से राती थी।  
जैसे यादों के अक्षर वह, अश्रु बिंदु से धोती थी।।  
माँ को लगा गोद से कोई, मानों सब कुछ छीन चला।  
फूल सभी घर की फलवारी से कोई ज्यों बीन चला।।  
बेटी के जाने पर घर ने, जाने क्या क्या खोया है।  
कभी न रोने वाला बाप, फूट फूट कर रोया है।।



## कुछ ऐसे भी लोग हैं



रजत वर्मा  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

हमारे एक मित्र खाने की प्रतियोगियता में लगातार।  
बीस वर्षों से प्रथम आ रहे हैं।  
पच्चीस आदमियों का खाना अकेले ही  
बड़े मजे खा रहे हैं।  
हमने एक दिन उनसे कहा  
मित्र आश्चर्य है मंहगाई के दौर में भी  
तुम इतना खा रहे हो।  
हमारी बात को सुनकर वे कुछ उदास हो गये।  
पहले कुछ दूर खड़े थे मगर अब पास हो गये।  
बोले अरे हम कहाँ  
कुछ हमसे भी अधिक खा रहे है।  
और इतना खाकर भी मजे से पचा रहे है।  
क्योंकि भईया यह स्वतन्त्र भारत है।  
यहाँ सबको खाने की आदत है।  
विद्यालय विद्यान खा रहे है।  
नेता ईमान खा रहे है।  
पुजारी भगवान खा रहे है।  
पंडित पुराण खा रहे है।  
मुल्ला कुरान खा रहे है।  
और कुछ ऐसे भी लोग है।  
जो सारा हिन्दुस्तान खा रहे है।



## कर्मवीर



सुमित पाल  
बी. एड. द्वितीयवर्ष

क्या कहेंगा जमाना इसकी न सोच तू।

कर्मवीरों की सुनता है जमाना

फिर क्यों? कैसा? करता है अफसोस तू?

सियार बनके सौ दिन जीने से अच्छा,

एक दिन का शेर बनके जी तू!

निचोड़ के संघर्षों की आग को,

हार, बेइज्जती का जहर पी तू!!

भाग्य की लकीरें तेरे हाथ में न सही,

मेहनत से अपने भाल पर खींच तू।

मंजिल तेरे कदमों में आएगी चली,

खून-पसीने से दिन-रात सींच तू!!

तू सिर्फ मिट्टी का इक कण नहीं,

सूर्य का तेज है तू!

तेरी सामर्थ्य असीम है तेरी शक्ति,

विवेकानन्द का विवेक पुंज है तू..!!

कष्ट, विपत्ति, असफलताएं

तुझे कनक से सोना बनाती है।

तेरी तलाश, तेरी जिज्ञासाओं की प्यास

तू है, तेरा होना बताती है।

मृत्यु का अर्थ है-नया जीवन,

जीवन गर यूं ही बीत गया तो !

गर संभाल ले तू अपना गाण्डीव,

प्रयास-अभ्यास करते-करते गर जीत गया तो!!

फिर मंजिल भी तेरी

तेरे होने से जमाना होगा !

फिर जीत भी तेरी होगी,

गर हार को तूने अपना माना होगा!!



## चुनावी मानसिकता

आज हमारा युवा वर्ग तकनीकी और वैज्ञानिक अध्ययन की तरफ बढ़ रहा है। एक तरफ धर्म-निरपेक्ष शिक्षा है क्योंकि इसके द्वारा हमारी आर्थिक और सामाजिक चेतना जागृत होती है। जिससे रूढ़िवादिता और अंधविश्वास का अन्त तथा घोर साम्प्रदायिक दंगों की शतरंजी चालें असफल होगी, पर क्या हम इन सब चालों को असफल कर रहे हैं जो लोग हम पर अपनी धिनौनी चाले चल रहे हैं। हमें अपना मोहरा बना रहे हैं तो क्या हम सचमुच इन शैतानों से स्वयं को बचा पाये हैं। क्यों हम इन गन्दी मानसिकता वाले लोगों को जो राजनीति में बैठे हैं और अपनी रोटियाँ सेक रहे हैं, हमारे बीच हिन्दु-मुसलमान, सिख, ईसाई इत्यादि के बीच झगड़े करा रहे हैं, और कभी धर्म कभी जात, कभी भाई बन्धुत्व के नाम पर हमसे ज्यादा अपना हित साध रहे हैं। अपना कीमती वोट देते समय हमसे कितने लोग यह देखते हैं कि हम अपना वोट किसको दे रहे हैं। हम लोग अपने देश के भाग्य निर्माता ऐसे लोगों को बनाते हैं जो ना तो शिक्षित हैं और ना ही शिक्षा का उनकी नजर में महत्व ही है। अपने देश में हम कोई भी नौकरी पाना चाहते हैं तो अपने शैक्षिक प्रमाणों के आधार पर हमको नौकरी प्राप्त होती है।

देश के भाग्य निर्माता प्रिय नेता जी के लिये क्यों शैक्षिक योग्यता निर्धारित नहीं है? क्यों हम अपना वोट ऐसे लोगों को देते हैं? क्या हम अपने देश के साथ न्याय कर रहे हैं।



डॉ० राहुल गुप्ता  
सहायक आचार्य

हम बड़े खुश होते हैं कि हम आजाद हैं और हम आजाद हो गये, पर क्या अपनी गलत मानसिकता के चलते हम वास्तव में आजाद हैं? तो क्या हमें अपनी मानसिकता को बदलने की जरूरत नहीं? क्या हमें उससे आजाद होने की जरूरत नहीं है। हम गुलाम रहेगें जब तक की अपनी मानसिकता नहीं बदल पायेगें।

एक तरफ लड़कियों के साथ जहाँ आये दिन बलात्कार होता है वहीं पर इसी समाज में ऐसी भी लड़कियाँ हैं जो लड़कों का उल्लू बनाती हैं और हद तो तब हो जाती है जब कभी बलात्कार का झूठा आरोप भी लगाती हैं।

हमारी मानसिकता सिर्फ वोटों तक ही सीमित नहीं है क्या? क्या हमारी माताओं का ये कर्तव्य नहीं कि वे अपने बेटे को सिखायें कि बेटा जिस तरह से तेरी बहन है सड़क पर चलने वाली, हर लड़की किसी की बहन है।



### विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



### नवरंग कार्यक्रम



### बाल दिवस



## विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



## ओरिएंटेशन कार्यक्रम

## विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



## दिवाली धूम समारोह



## विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



## महिला सशक्तिकरण रैली तथा पोस्टर प्रतियोगिता

## अनमोल वचन



योगेश शर्मा  
पुस्तकालयाध्यक्ष (बी.एड.)

- मेहनती का हाथ उसे कभी ना कभी दौलतमन्द बना देता है।
- बुलन्द हौसला रखने वाले इन्सान के हाथ में आकर मिट्टी भी सोना बन जाती है।
- खामोशी गुस्से का बेहतरीन इलाज है।
- माँ चाहे पढ़ी-लिखि ना हो परन्तु दुर्लभ ज्ञान हमें माँ से ही प्राप्त होता है।
- सुन्दरता केवल हमारा ध्यान केन्द्रित कर सकती है परन्तु चरित्र हमारे हृदय को छूता है।
- शक रिश्तों को खोखला कर देता है।
- किसी व्यक्ति को हराना आसान है परन्तु किसी व्यक्ति के हृदय को जीतना मुश्किल है।
- आस दो परन्तु कभी किसी को विश्वास मत दो।
- इस दुनिया में खुश रहने के लिये जरूरी है कि हर व्यक्ति के मन में एक ऐसा कब्रिस्तान हो जहाँ वो लोगों की गलतियों को दफन कर सकें।
- दोस्ती करो परन्तु इज्जत हाथ से मत जाने दो।
- जैसा तुम सोचते हो, वैसे ही बन जाओगे। खुद को निर्बल मानोगे तो निर्बल और सबल मानोगे तो सबल ही बन जाओगे।
- सफलता की खुशियां मनाना ठीक है लेकिन असफलताओं से सबक सीखना अधिक महत्वपूर्ण है।
- दुनिया में सबसे कीमती चीज सिर्फ और सिर्फ समय है, क्योंकि हम इसे अगर एक बार गवां दें तो दोबारा हासिल नहीं कर सकते।



## हिन्दी क्यों स्वीकार्य है?

भारत जननी एक हृदय है।  
एक राष्ट्रभाषा हिन्दी में  
कोटि-कोटि जनता की जय हो।  
स्नेह युक्त मानव यही वाणी।



राजीव कुमार  
सहायक आचार्य

“राष्ट्र के एकीकरण के लिये सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।”

-लोकमान्य तिलक

“राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिये आवश्यक है।”

-महात्मा गाँधी

“देश भर को बाँधने के लिये भारत के भिन्न-भिन्न हिस्से एक-दूसरे से सम्बन्धित रहे , इसलिये हिन्दी की जरूरत है।”

-जवाहर लाल नेहरू

“राजनीति वाणिज्य तथा कला के क्षेत्र में देश की अखण्डता के लिये हिन्दी की महत्ता की ओर सभी भारतीयों को ध्यान देना चाहिये चाहे वह किसी भी क्षेत्र में रहने वाले और अपनी-अपनी प्रान्तीय भाषाएं बोलने वाले हो।”

-चक्रवर्ती राजगोलाचारी

“हिन्दी के माध्यम से सारे भारत को एकता के धागे में पिरोया जा सकता है।”

-दयानन्द सरस्वती

“हिन्दी केवल भाषा ही नहीं देश को जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम भी है। हिन्दी भाषा का असली उद्देश्य देश की एकता को मजबूत रखना है। केवल हिन्दी ही देश को एक राष्ट्र के रूप में बनाये रख सकती है।”

-शंकर दयाल शर्मा

“देश को एक सूत्र में पिराने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है।”

-लाल बहादुर शास्त्री

“राष्ट्र की बुनियाद राष्ट्र की भाषा है। नदी , पहाड़ और समुद्र राष्ट्र नहीं बनाते। भाषा ही वह बन्धन है जो चिरकाल तक राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रखती है , और उसकी संरचना बिखरने नहीं देती है।”

-मुंशी प्रेमचन्द्र

“हमने अपने देश का राजनीतिक एकीकरण सम्पन्न किया है। राजभाषा हिन्दी देश की एकता को कश्मीर से कन्याकुमारी तक अधिक सुदृढ़ बना सकेगी। अंग्रेजी की जगह भारतीय भाषा को स्थापित करने से हम निश्चय ही एक-दूसरे के नजदीक आयेगें।

-डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

“हमें अपनी प्रान्तीय भाषाओं से भी उतना ही प्रेम है जितना हिन्दीसे। परंतु हिन्दी अखिल हिन्दुत्व की राष्ट्र भाषा होने के लिये सब प्रकार से सर्वश्रेष्ठ है।”

-विनायक दोमोदर सावरकर

“देश की अखण्डता को बनाये रखने के लिये हिन्दी सबसे अधिक सहायक है।”

-ज्ञानी जैल सिंह

“सरलता, सम्पन्नता, व्यापकता एवं प्रांजलता से सीखी जाने वाली भाषाओं में हिन्दी सर्वोपरि है।”

-तिलक

“अस्पष्टता एवं अधूरी अंग्रेजी से सरल, सुगम हिन्दी बेहतर है।”

-के० कामराज

“अगर आज हिन्दी राष्ट्र भाषा मान ली गयी तो वह इसलिये नहीं कि वह किसी प्रान्त विशेषकी भाषा है बल्कि इसलिये कि वह अपनी सरलता , व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा है।

-नेता सुभाष चन्द्र बोस

“हिन्दी ऐसी हो कि उसमें सब तरह की बुद्धियाँ खिल सके भाषा सटीक हो , रंगीन हो, अलग-अलग मतलब को बता सके यानि परिभाषिक हो और जोरदार और रोचक हो | सम्पन्न भाषा का और कोई मतलब नहीं होता ।

-डॉ० राममनोहर लोहिया

“वाणी राष्ट्र की आत्मा है। राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी अपनी शक्ति प्रदर्शित कर चुकी है।”

-शिवराज वि० पाटिल

“हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है उसे दृढ़ करती है।”

-राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन



## माँ रेशम का तारा



सृष्टि  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

माँ चन्दन की गंध है, माँ रेशम का तारा।  
बँधा हुआ जिस तार से, सारा ही घर द्वारा  
जगह-जगह तीर्थ करो, फिरो सुबह से शाम।  
माँ के चरणों सा नहीं, दूजा कोई धाम।  
माँ की ममता का नहीं, इस धरती पर मोला।  
शीशनवत् इतिहास है, बलिहारी भूगोला।  
शीश नवाते घूमते, गये अनगिनत धाम।  
माँ के दिल को दुःख दिया, सभी तीर्थ निष्काम।

बेटे के पावों चुभी, एक तनिक सी फांसा।  
माँ का दिल घायल हुआ तेज हो गई सांसा।  
माँ थी घर में जब तलक, जुड़े रहे सब तारा।  
माँ के जाते ही उठी आंगन में दीवारा।  
यहाँ वहाँ, सारा जहाँ, नापे अपने पांवा।  
माँ के आंचल सी नहीं और कहीं भी छांवा।  
रिश्तों का इतिहास है, रिश्तों का भूगोला।  
सम्बन्धों का जोड़ का, माँ है फेविकोला।





## नारी पीड़ा

लाख मुश्किलों का सामना कर वो हर पल खुश नजर आती है।

कौन सहेगा इतना दर्द ,

जो एक नारी सह जाती है।

पैदा होने से पहले कभी कोख में ही खत्म कर दी जाती है ,

हो जाता जब जन्म उसका तो मनहूस बताई जाती है,

कौन सहेगा इतना दर्द जो एक नारी सह जाती है।

हैवानियत भरी इस दुनिया में कभी बचपन में तो कभी जवानी में हैवानियत का शिकार हो जाती है।

कौन सहेगा इतना दर्द जो एक नारी सह जाती है ।

बचपन से पूरी उम्र हजारों पाबंदियां उस पर लगाई जाती है।

चार दिवारी में एक पंछी की तहर घर में कैद कर दी जाती है ।

कौन सहेगा इतना दर्द जो एक नारी सह जाती है।

जवानी में उस की इच्छाओं को मार कर एक अजनबी के साथ ब्याह दी जाती है।

अपनो की खुशी के लिए, वो हर दर्द, हर दुख को सह जाती है।

कौन सहेगा इतना दर्द जो एक नारी सह जाती है॥



प्रशांत  
बी. एड. द्वितीय वर्ष





## यथार्थवाद

लाज शर्म घुंघट के तुमने सारे पर्दे छोड़ दिए,  
तोड़ के हर रिश्ते की गरिमा यारों से रिश्ते जोड़ दिए  
सुना नहीं तुमने कभी तलवारों की टंकारो को,  
नहीं किया महसूस कभी जौहर की उठती लपटों को  
हुई बावली पल हर पल बस प्रसिद्ध की आग है,  
उसे ही पाने की खातिर आज वस्त्रो का भी त्याग है  
हे नारी वासुदेव पुत्र में,  
आज ये तुमसे कहता हूं देख तुम्हारी ये हालत में पल पल आंसू पीता हूं,  
संस्कारों के मोती से तुम स्वयं अपना श्रृंगार,  
करो आत्म सुरक्षा की खातिर तलवारों को तैयार करो  
लाज शर्म का कहना तुम जब खुद को पहनाओगी,  
लेकर सच्ची भक्ति दिल में बन द्रोपती मुझे पुकारोगी  
तब मैं लाज बचाने को स्वयं तोड़ कर आऊंगा,  
कलयुग की इस तरह पे वो द्वापर संग्राम दिखाऊंगा।



भावना त्यागी बी.  
एड. प्रथम वर्ष



## मेरा देश महान



काजल  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

मेरा देश महान है महान है  
कल भी हिन्दुस्तान था वो  
आज भी हिन्दुस्तान है  
आजादी की खातिर  
वीरों ने जब मोर्चा खोला  
टैंको की भी उड़ा गया  
हामिद का बारूदी गोला  
जहाँ देश का बच्चा -बच्चा  
अंगारा था शोला था  
हंसते हंसते हुए प्राण त्याग दिये  
वन्दे-मातरम तब बोला था  
सहज के रखिये इस मिट्टी को  
वीरों का बलिदान है  
मेरा देश महान है महान है



## दोस्ती की मिसाल



मुस्कान  
बी. एड. प्रथम वर्ष

हर रिश्ते से बढ़कर होती दोस्ती,  
जाने क्यों दुनिया इसको है कोसती।  
बार-बार बनती है, इस दुनिया में दोस्ती की मिसाल,  
जो रहती है बरकरार सालों साल।  
जिसकी मिसाल दे दुनिया सारी,  
खाई जाती हैं आज भी दोस्ती की कसमें,  
इस दुनिया में सच्चे दोस्त हैं कम से कम।  
हर रिश्ता बनता है दोस्ती से,  
जिन्दगी भर रहे दोस्ती हमारी।  
मरने से पहले ना हमारी दोस्ती का अन्त हो।  
दुनिया से दोस्ती कभी ना खत्म हो,  
मैं तो चाहूँ, इस दुनिया में रहे हमेशा हमारी दोस्ती।



## विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



## विचार गोष्ठी



## विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



## मेरठ महोत्सव भ्रमण



## मातृभाषा दिवस कार्यक्रम

## विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



## व्यावसायिक शिक्षा कार्यशाला



## विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



## मेधावी छात्र सम्मान समारोह

## माँ !

रूपल  
बी. एड. द्वितीय वर्ष



ख्वाब है कि आओ तुम एक बार  
फ़क़त हकीकत यह भी है कि  
आना नहीं है अब तुम्हें....  
आओगी भी कैसे भला  
जन्नत में जो हो माँ!  
आना तो नहीं है तुम्हें इस जहाँ में दुबारा, पर अच्छा लगता है...  
यूँ ही घंटों छज्जे पर तुम्हारा इंतज़ार करना माँ!  
आना तो नहीं है तुम्हें, पर अच्छा लगता है  
यूँ ही सपनों में तुमसे बातें करना माँ!  
यूँ तो बहुत लोग हैं  
सर पर हाथ रखने वाले पर,  
बहुत याद आता है तुम्हारा  
वह प्यार से मेरा सर सहलाना माँ  
आना तो नहीं है तुम्हें अब, पर बहुत चाहता है मन  
तुम्हारे हाथों से निवाले खाना माँ  
जोर ही नहीं है इन यादों पर अब  
बहुत याद आता है तुम्हारा  
वह बेवजह मेरे पैरों को दबाना माँ  
एक शिकायत ताउम्र रहेगी तुमसे माँ  
मौका एक मुझे भी दिया होता  
तुम्हें ढेरों खुशियाँ देने का...खैर....  
आना तो नहीं है तुम्हें इस जहाँ में दुबारा  
पर जरा सी झलक तो दिखाओ ना माँ  
बस एक बार तो आओ ना माँ!



## जीवन की अविरल धारा

यशस्वी  
बी. एड. द्वितीय वर्ष



मैं रहूँ न रहूँ  
जीवन की अविरल धार,  
यूँ ही बहती रहेगी,  
कौन कहता  
जीवन का अंत होता है ,  
सत्य तो यह है जीवन का अंत ,  
न कभी हुआ और न होगा।  
जीवन तो ज्योति से ज्योति जलाने,  
के सिद्धान्त पर निरन्तर गतिमान है,  
और गतिमान रहेगा।  
जीवन-संघर्ष की गाथा  
कहाँ से शुरू हुई कहाँ तक है ,  
और कहाँ तक जाएगी कोई नहीं जानता।  
जीवन की यही तो  
अमित गाथा है,  
कि सदियों से तक यह  
चलता रहेगा, चलता रहेगा, चलता रहेगा।



## साई तुझको तेरा (भजन)



प्रियंका रानी  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

लाख छुपाओ छुप ना सकेगा, पाप किया हुआ तेरा,  
मन में बैठा देख रहा है साई तुझको तेरा॥

एक सच छुपाने के खातिर कितने झूठ बनाते हैं,  
झूठ को सच बनाने खातिर कितने यत्न लगाते हैं,  
झूठ छोड़कर सच बोलने पर क्या लगता है तेरा,  
मन में बैठा देख रहा है साई तुझको तेरा॥

पीतल तो है काला होता, कितना ही चाहे छुपाऊं जी,  
सोना कभी खराब ना होता, मिट्टी में चाहे दबाऊं जी,  
सोने को जब आग में डालो, हो जाये रंग सुनहरा,  
मन में बैठा देख रहा है साई तुझको तेरा॥

सच को तोलो सच को बोलो, सच्चा मन कमाओ जी  
सच्चा सौदा नाम हरी का घर अपने ले जाओ जी,  
बिना भाग्य कर नहीं सकता लगता है मन पर पहरा,  
मन में बैठा देख रहा है साई तुझको तेरा॥



## माता-पिता ईश्वरका दूसरा स्वरूप



शिवानी गोस्वामी  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

मुझे इस दुनिया में लाया, मुझे बोलना चलना सिखाया।  
ओ मात-पिता तुम्हे वन्दन, मैंने किस्मत से तुम्हे पाया।  
मुझे इस दुनिया में लाया, मैं जब से जग में आया  
बने तब से शीतल छाया, कभी सहलाया गोदी में  
कभी कन्धों पर बिठाया, मेरे सर पर हाथ रखकर प्यार ही प्यार लुटाया  
ओ मात-पिता तुम्हे वन्दन।  
मैं उठाकर सर चल पाऊं, इस लायक तुमने किया है  
कही हाथ नहीं फैलाऊं, मुझे जितना तुने दिया है  
मुझे जग रीत सिखायी, मुझे धर्म का पाठ पढ़ाया  
ओ मात-पिता तुम्हे वन्दन।



## प्रार्थना- हे प्रभु



वर्षा सैनी  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

हे प्रभु एक प्रार्थना है, अवश्य पूर्ण करना,  
मांगती हूँ मैं कुछ, ये नहीं कि कभी गिरू नहीं,  
बस मुझे रास्ते के पत्थर देखने की दृष्टि देना,  
माँगती हूँ ये नहीं कि मार्ग में काँटे न मिले,  
बस देना साहस, हर शूल को फूल बना सकूँ।  
माँगती हूँ ये नहीं कि कभी आँसू न मिले,  
हाँ! पर मेरा हर आंसू स्वार्थी नहीं, तेरा प्रेमी हो,  
माँगती हूँ विश्वास अटूट विश्वास, जो मेरे लिये,  
अधीरता का नहीं, धैर्य का संबल बने।  
माँगती हूँ ये नहीं कि मुझे चिर जीवन मिले,  
हाँ! तेरे चरणों में प्राण निकले तो मृत्यू भी जीवन लगे।

## नकल करना बुरा है



प्रीती सागर  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

एक पहाड़ की ऊंची चोटी पर एक बाज रहता था। पहाड़ की तराई में बरगद के पेड़ पर एक कौआ अपना घोंसला बनाकर रहता था। वह बड़ा चालाक और धूर्त था। उसकी कोशिश सदा यही रहती थी कि बिना मेहनत किए खाने को मिल जाए। पेड़ के आसपास खोह में खरगोश रहते थे। जब भी खरगोश बाहर आते तो बाज ऊंची उड़ान भरते और एकाध खरगोश को उठाकर ले जाते। एक दिन कौआ ने सोचा, “वैसे तो ये चालाक खरगोश मेरे हाथ आएंगे नहीं, अगर इनका नर्म मांस खाना है तो मुझे भी बाज की तरह करना होगा। एकाएक झपट्टा मारकर पकड़ लूंगा”।

दूसरे दिन कौआ ने भी एक खरगोश को दबोचने की बात सोचकर ऊंची उड़ान भरी। फिर उसने खरगोश को पकड़ने के लिए बाज की तरह जोर से झपट्टा मारा। अब भला कौआ बाज का क्या मुकाबला करता। खरगोश ने उसे देख लिया और झट वहां से भागकर चट्टान के पीछे छिप गया। कौआ अपनी ही झोंक में उस चट्टान से जा टकराया। नतीजा, उसकी चोंच और गरदन टूट गई और उसने वहीं तड़प कर दम तोड़ दिया।

शिक्षा - नकल करने के लिए भी अकल चाहिए।

## आश्चर्यजनक किन्तु सत्य



ऋतुराज  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

- शरीर की सबसे सशक्त मांसपेशी हमारी जीभ होती है।
- चीन की महान दीवार को मजबूत बनाने के लिए चावल के आटे का प्रयोग किया गया था।
- चीन की महान दीवार 1400 मील लम्बी है।
- चीते शेर की तरह दहाड़ नहीं लगाते बल्कि एक बिल्ली की तरह मिमयाते हैं।
- हमारे पसीने में दुर्गन्ध नहीं होती, बल्कि त्वचा में मौजूद जीवाणु उसमें बदबू पैदा कर देते हैं।
- विश्व की आबादी से ज्यादा जीवाणु हमारे मुंह में होते हैं।
- शिशु पैदा होने से पहले ही सपने देखने शुरू कर देता है।
- हमारे शरीर का ढाँचा 35 साल तक की उम्र तक बढ़ता रहता है, जिसके बाद वह सकुड़ने लगता है।
- जन्म के समय जिराफ के बच्चों की 6 फीट से गिरने पर भी कोई चोट नहीं आती।

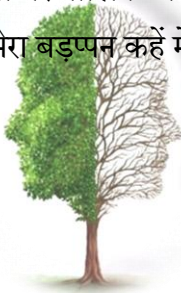


## व्यवहार का मीठा होना



भारती रानी  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

व्यवहार मीठा न हो तो  
हिचक्रियाँ भी नहीं आती,  
बोल मीठे न हो तो कीमती मोबाईलों पर  
घटियाँ भी नहीं आती।  
घर बड़ा हो या छोटा, अगर मिठास न हो,  
तो इंसान तो क्या, चीटियाँ भी नजदीक नहीं आती।  
जीवन का आरम्भ, अपने रोने से होता है  
और  
जीवन का अंत दूसरों के रोने से,  
इस आरम्भ और अंत के बीच का समय भरपूर हास्य  
भरा हो,  
बस यही सच्चा जीवन है।  
हे प्रभु! न किसी का फेंका हुआ मिले,  
न किसी से छीना हुआ मिले,  
बस इतना देना मेरे मालिक अगर जमीन पर बैठूँ  
तो लोग उसे मेरा बड़प्पन कहें मेरी औकात नहीं।



## पैसे की सीमा



अदिति  
बी. एड. प्रथमवर्ष

पैसा किताब खरीद सकता है, विद्या नहीं।  
पैसा संगीत खरीद सकता है, स्वर नहीं।  
पैसा डाक्टर खरीद सकता है, जीवन नहीं।  
पैसा मूर्ति खरीद सकता है, भगवान नहीं।  
पैसा शरीर खरीद सकता है, आत्मा नहीं।  
पैसा कलम खरीद सकता है, सुलेख नहीं।  
पैसा बिस्तर खरीद सकता है, नींद नहीं।  
पैसा नारी खरीद सकता है, पत्नी नहीं।  
पैसा लड़का खरीद सकता है, बेटा नहीं।  
पैसा इंसान खरीद सकता है, प्यार नहीं।  
पैसा आराम के साधन खरीद सकता है, चैन नहीं।  
पैसा तलवार खरीद सकता है, साहस नहीं।  
पैसा जीवन ले सकता है, दे सकता नहीं।



## देवि! हिन्दी



प्राची  
बी. एड. द्वितीयवर्ष

देवि! हिन्दी तुम्हें है हमारा नमन।  
हैसमर्पित तुम्हें काव्य का यह सुमन॥

आपकी दिव्य रचना है अनुपम कला॥

स्वर और व्यंजन का संगम है कितना भला॥

स्वर है बारह बत्तीस व्यंजन सुहार,  
शब्द और वाक्य की पंक्ति है निर्मला,

तेरे द्वारा होता है साहित्य का उत्तम सृजन।

देवि! हिन्दी तुम्हें है हमारा नमन।

शब्द और अर्थ ये दो अलंकार है।

आप में नौ रसों की सुभरमार है॥

हास्य, श्रृंगार, वीभत्स, अदभूत, करूणा

वीर रौद्र भयानक पर अधिकार है॥

शान्त रस ज्यों सुगन्धित मलय का पवन।

देवि! हिन्दी तुम्हें है हमारा नमन॥

गीतिका और हर गीतिका कुण्डली॥

दोहा, चौपाई, मुक्तक ज्यों चम्पाकली॥

और धनाक्षरी सोरठा व गजला

ये कहानी उपन्यास कवितावली॥

काव्य नाटक से मिटती है उर की तपन।

देवि! हिन्दी तुम्हें है हमारा नमन॥

सूर, तुलसी, कबीरा सुधर सर्जना।

प्रेमचन्द, शुक्ल, पन्त की भावना॥

मीरा, रहिम्न, रसखान और जायसी,

तेरे सेवक अनेकों की है वन्दना॥

कवि निराला व हरिशचन्द्र लागी लगन।

देवि! हिन्दी तुम्हें है हमारा नमन॥

भारतीय जनों की तू पहचान है।

और जिज्ञासू के हित का ज्ञान है॥

विश्व भाषाओं में तुम अति सुन्दरी,

देश को तुझ पर अभिमान है॥

प्रेमी जय तेरी गूँजे धरा और गगन।

देवि! हिन्दी तुम्हें है हमारा नमन॥





## व्यंगं



वीरेन्द्र कुमार  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

चाल तुम्हारी समझ गये हम, जुल्म तुम्हें जो ढाना है,  
कहते गरीबी खत्म करेंगे, गरीबों को निपटाना है।  
चाल तुम्हारी समझ गये हम जुल्म तुम्हें जो ढाना है,  
खाई से एक दरिया बन गया, बीच अमीरी-गरीबी के,  
हेरा-फेरी करने वालों ये तो खेल पुराना है।  
कहते गरीबी खत्म करेंगे, गरीबों को निपटाना है।  
चाल तुम्हारी समझ गये हम जुल्म तुम्हें जो ढाना है।  
रात दिनों की मेहनत करके, कितनी पैदावार बढ़ी,  
जो भी पैदा हुआ खेत में, घर में ही गल जाना है।  
कहते गरीबी खत्म करेंगे, गरीबों को निपटाना है।  
चाल तुम्हारी समझ गये हम जुल्म तुम्हें जो ढाना है।  
हमसे भूल हुई है भारी, जो तुम पर एतबार किया,  
ये हालत बदल जायेंगे ये तो एक जमाना है।  
कहते गरीबी खत्म करेंगे, गरीबों को निपटाना है।  
चाल तुम्हारी समझ गये हम जुल्म तुम्हें जो ढाना है।  
हुनर तुम्हारा गुमराह करना, काबिले तारीफ हो तुम,  
झोपडी में आग लगाकर, झूठे अशक बहाना है।  
कहते गरीबी खत्म करेंगे, गरीबों को निपटाना है।  
चाल तुम्हारी समझ गये हम जुल्म तुम्हें जो ढाना है।

नहीं हमेशा कुर्सी पर आसीन रहा,  
वक्त आने पर पता चलेगा, मलते हाथ रह जाना है।  
कहते गरीबी खत्म करेंगे, गरीबों को निपटाना है।  
चाल तुम्हारी समझ गये हम जुल्म तुम्हें जो ढाना है।  
नहीं चाहता मैं कि, कोई बागी मेरा नाम धरे,  
उनके ही सर जान पड़ेगी, कुछ दिन का नजराना है।  
कहते गरीबी खत्म करेंगे, गरीबों को निपटाना है।  
चाल तुम्हारी समझ गये हम जुल्म तुम्हें जो ढाना है।  
है तेज बहुत शमशीर खुदा की, देर है पर अन्धेर नहीं,  
अंग्रेज यहां से भाग गये, यहां कोई नहीं अनजाना है।  
कहते गरीबी खत्म करेंगे, गरीबों को निपटाना है।  
चाल तुम्हारी समझ गये हम जुल्म तुम्हें जो ढाना है।  
अमन है अपना मजहब, आदत से मजबूर है तू,  
चाहे लाख सितम हो जायें, खन्जर नहीं उठाना है।  
कहते गरीबी खत्म करेंगे, गरीबों को निपटाना है।  
चाल तुम्हारी समझ गये हम जुल्म तुम्हें जो ढाना है।

## चुटकुले



निर्मल कुमार  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

एक आदमी महा कंजूस था  
उसने एक शीशी में घी भर कर उसका  
मुँह बंद किया हुआ था।  
जब वह और उसके बेटे खाना खाते  
तब शीशी को रोटी से रगड़कर  
खाना खा लेते थे।  
एक बार महा कंजूस किसी काम  
से बाहर चला गया।  
लौटने पर उसने बेटों से पूछा  
खाना खा लिया था।  
बेटे बोले, हाँ।  
महा कंजूस पर शीशी तो मैं अलमारी  
में बन्द करके गया था।  
बेटे बोले, हमने अलमारी के हैंडल  
से रोटियाँ रगड़ कर खा लीं।  
महा कंजूस नाराज होकर बोला  
नालायकों, क्या तुम लोग एक दिन बिना  
घी के खाना नहीं खा सकते थे। बेटे बेहोश!

## ग्यारह सत्य अजर अमर



केशव मित्तल  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

सबसे सर्वोत्तम दिन -आज  
सबसे उपर्युक्त समय -अभी  
सबसे बड़ा पाप -भय  
सबसे खतरनाक बात -घृणा  
सबसे ज्यादा आवश्यक -ज्ञान  
सबसे बड़ी बाधा -अधिकबोलना  
सबसे बड़ी भूल -समय की बर्बादी  
सबसे बड़ा शिक्षक - समय  
सबसे बड़ा मनुष्य -विवेक  
सबसे आसान काम -निंदा  
सबसे बड़ा दिवालिया -हतोत्साहित

## नारी

हर नारी की करो सराहना, उसने जीवन के सत्य को जाना।  
कठिन राहों पर चलते रहना, हमने है उसे जाना।  
झाँसी की रानी की भाँति, संग्राम के लिए उठाई तलवार।  
और इन्दिरा गाँधी की भाँति, देश के लिए सहे अनेक वार।  
पीड़ा को पलकों पर पाला, आँसू बनकर बही है नारी।

तुम क्या हो तुम क्या जानो, इसका उत्तर भी है नारी।।  
जितनी शक्ति है दुर्गा में, उतना ही प्रतिमान है नारी।।  
जो मानव है अत्याचारी, उसके लिए अभिशाप है नारी।  
जो मानव है सदाचारी, उसके लिए वरदान है नारी।।



राखी  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

## जीवन अनमोल

सचमुच जीवन है अनमोल, कौन लगाये इसका मोल,  
इस जीवन का सच्चा सार, सत्य बोलना हो आधार,  
हर क्षण आगे बढ़ते जाओ।  
बाधाओं से मत घबराओ, सभी समस्या सरल बनाओ,  
जीवन में कुछ कर दिखलाओ, चारों ओर खुशी फैलाओ।  
काम तुम्हारा सबको भाये, दूर दूसरों के दुख करना  
ऐसा पावन काम करो, जो सबके प्यारे बन जाओ।  
सबका जीवन सुखी बनाओ, जहाँ भी मिले दीन-दुःखी,  
संभल देकर करो सुखी, सचमुच जीवन है अनमोल।



स्मिता  
बी. एड. प्रथमवर्ष



## गजल

सामने से तो हर शख्स बेहतर दिखायी देगा ।  
जो पीठ देखोगे तो वहाँ खंजर दिखायी देगा।  
सामने से तो हर शख्स बेहतर दिखायी देगा ।  
खुल के अब कोई सामने नहीं आता ।  
बाहर वह ना दिखेगा जो अन्दर दिखायी देगा।  
कद से हर कोई बौना ही नहीं होता।  
आँसू के हर कतरे में समन्दर दिखायी देगा।  
शकल से यूँ हर नेता इंसा ही दिखेगा।  
जो गौर से देखोगे तो अजगर दिखायी देगा।  
ऐसा ही रहा हाल गर वतन का ।  
कुछ बरसों बाद अस्थि पंजर दिखायी देगा।  
वह सुबह जरूर आयेगी लेकिन न जाने कब  
अंधेरी रातों का कब तक मंजर दिखायी देगा।



खुशी वात्स्यान  
बी. एड. द्वितीय वर्ष



## जरा देर और ठहर जा

जरा देर और ठहर जा, समेट ले खुद को,  
रात गहरा गई तो क्या, उजाला बस होने को है।  
पल-पल बीत गए कितने ही, तू भी धीमे-धीमे से कहीं बीत गया,  
जरा देर और ठहर जा, मंजिल बस आने को है।  
खुद से लड़ते-लड़ते देख, समर का दिन भी आ गया  
जरा देर और ठहर जा फतेह बस होने को है।



प्रिंसी जैन  
बी. एड. द्वितीय वर्ष





## विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



## महिला दिवस पर छात्राओं द्वारा प्रदर्शनी



## विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



## पुरातन छात्र सम्मेलन

## विभागीय प्रमुख गतिविधियाँ



## अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी



## बेरोजगारी



आकांशा  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

अरे ओ, जीवन से निराश योद्धाओं सुनो,  
सड़क पर भटकते बेरोजगारों सुनो।  
अँधेरे से निकलने को कुछ कर्म तो करो।  
अपनी स्थिति को मानकर कुछ शर्म तो करो।  
कब तक कोसते रहोगे तुम, अपनी सरकार को?  
क्या भुला दोगे तुम दुनिया के तिरस्कार को?  
दुर्भाग्य से निकलने का जतन तो करो।  
अपनी धड़कनों को समझने का प्रयत्न तो करो।  
माँ को ढेरों तमन्ना थी, तेरे जन्म के बाद,  
पिता ने देखे थे सपने दशकों बाद,  
उनके ख्वाबों को आँखों में जगह तो दो।  
संभल जायेंगे पाँव तेरे पहले सतह तो दो।  
जन्म लेना, मर जाना, नियती है संसार की,  
सोचा कभी, क्या वजह थी? तेरे अवतार की,  
मिट्टी हो जाएगी सोना, तुम स्पर्श तो करो।  
कर रही इंतजार मंजिल, तुम संघर्ष तो करो।

## क्लास मॉनीटर



राशि  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

जो क्लास में बने मॉनीटर,  
कोरीशान दिखाते हैं।  
आता जाता कुछ भी नहीं,  
पर हम पर रोब जमाते हैं।  
जब क्लास में टीचर नहीं,  
तो खुद टीचर बने जाते हैं।  
कॉपी पेंसिल लेकर,  
बस नाम लिखने लग जाते हैं।  
खुद तो हमेशा बातें करें,  
हमें चुप करवाते हैं।  
अपनी तो बस गलती माफ,  
हमें बलि चढ़ाते हैं।  
क्लास तो संभाल पाते नहीं,  
बस चीखते और चिल्लाते हैं।  
भगवान बचाए इन मॉनीटर से  
इन्हें हम नहीं चाहते हैं।

## नेता



दीपांशी  
बी. एड. प्रथमवर्ष

हर साल बड़े-बड़ेवादों के साथ आते हैं ये,  
हर साल यू ही निराश कर चले जाते हैं ये।  
हर बार एक ही बात कह जाते हैं ये,  
हर वक्त यही सुनाते हैं ये,  
कि बदल रख देंगे इस समाज को हमारे लिए,  
हर वक्त यही दावे करते रहते हैं ये।  
इनकी बातों में आकर हम अपने राह से  
भटक जाते हैं।  
इनको अपना मत देकर बाद में पछताते हैं  
इनके चक्कर में रहकर हम झूठ और धोखे ही पाते हैं।  
जब होता है हमें इनके झूठ का एहसास  
तो हम निराश होकर अपनी सच्चाई से बने  
घरोंदों में लौट आते हैं।  
इनकी शान ही झूठी, पहचान झूठी, इनकी हर एक  
बात झूठी,  
बदलकर रख देंगे हम इन घूसखोरों को  
इनकी सरकार ही झूठी।



## मेरा लक्ष्य



हर्षिता  
बी. एड. प्रथमवर्ष

जिन्दगी कुछ यूँ ही न मिट जाए,  
खयाल कहीं, खयाल ही न रह जाए,  
सोचती हूँ मृत्यु कब आ जाए,  
कहीं मेरा लक्ष्य, धरा ही न रह जाए।  
चाहती हूँ इस जीवन में कुछ करना,  
ख्वाबों में न सोचा हो जितना,  
कहीं बीच में ही, जीवन के सपनों में,  
दरार न पड़ जाए।  
सपना कहीं टूट कर चूर-चूर न हो जाए,  
पर साहस करती हूँ इतना कि टूटने पर  
समेट लूँगी,  
अपने लक्ष्य की राह से, कभी न हटूँगी,  
बाधाएँ राह में जितनी भी आ जाए।  
उठकर इसका सामना करूँगी,  
आशा दीप जलाएँ रखूँगी,  
अपना लक्ष्य पाकर ही रहूँगी,  
कुछ कर दिखाना चाहती हूँ  
शायद यही भावना राह दिखाए,  
साहस पर साहस बढ़ता जाए।

## पंचतंत्र की कहानी - मूर्ख साधू और ठग



अक्षय शर्मा  
बी. एड. प्रथमवर्ष

एक गांव के मंदिर में देव शर्मा नाम का प्रतिष्ठित साधू रहता था। गांव में सभी लोग उसका आदर और सम्मान करते थे। उसे दान में कई तरह के वस्त्र व उपहार और पैसे मिलते थे। उन वस्त्रों को बेचकर साधू ने बहुत धन जमा कर लिया था। साधू हमेशा अपने धन की सुरक्षा के लिए चिंतित रहता था और कभी किसी पर भरोसा नहीं करता था।

वह अपने धन को एक पोटली में रखता था और उसे हमेशा अपने पास रखता था। उसी गांव में एक ठग रहता था, जिसकी नज़र साधू के धन पर थी। अंत में उसने निर्णय लिया कि वो वेश बदल कर साधू को ठगेगा। उसने छात्र का वेश धारण किया और साधू के पास जाकर बोला कि वह उसे अपना शिष्य बना ले। साधू तैयार हो गया और वह ठग अपने मनसूबे में कामयाब हो गया। वह साधू के साथ ही मंदिर में रहने लगा।

ठग साधू की भी खूब सेवा करता। साथ ही मंदिर की साफ-सफाई व अन्य काम करता था। साधू उस पर बहुत विश्वास करने लगा और ठग अपनी मंज़िल के और करीब जाने लगा।

एक दिन साधू को पास के गांव में एक अनुष्ठान के लिए आमंत्रित किया गया। साधू अपने शिष्य के साथ निकल पड़ा। रास्ते में एक नदी पड़ी। साधू ने नदी में स्नान करने की इच्छा ज़ाहिर की।

उसने अपने धन की पोटली को कंबल में छुपाकर रख दिया और ठग से सामान की रखवाली करने को कहा। ठग तो न जाने कब से इस दिन का इंतज़ार कर रहा था, जैसे ही साधू नदी में डुबकी लगाने गया, वह धन की पोटली लेकर भाग गया।

सीख - इस कहानी से यह सीख मिलती है कि किसी अजनबी की चिकनी-चुपड़ी बातों में आकर उस पर भरोसा नहीं करना चाहिए। इस तरह के लोगों से हमेशा सतर्क और सावधान रहना चाहिए।





## अकबर बीरबल की नोक-झोंक

जैसे को तैसा



सर्दियाँ खत्म हो रही थी और सूर्य की किरणों की गरमी बढ़ने लगी थी। माहौल बड़ा सुखद प्रतीत हो रहा था। ऐसे में बीरबल और अकबर अपने अपने घोड़ों पर सवार होकर कुदरत के नज़ारे देखने को निकल पड़े। चारों ओर की सुन्दरता को देखकर बादशाह के मुहँ से यह निकल पड़ा, “भाई अस्क पेदार शूमस्त (शूमा हस्त)। इन शब्दों के दो अर्थ थे, पहला अर्थ फारसी में था की “यह घोड़ा तुम्हारे बाप का है” और दूसरा अर्थ था “यह घोड़ा तुम्हारा बाप है”।

बीरबल तुरंत समझ गए कि बादशाह क्या कहना चाहते हैं। वह बोला, “दाद-ए-हुजूरस्त”, इसका अर्थ था कि यह हुजूर का दिया है। बीरबल का जबाब सुनकर बादशाह के पास कहने को कुछ भी नहीं बचा था अर्थात जैसे को तैसा जबाब बीरबल ने दिया।



अंजलि रानी  
बी. एड. प्रथम वर्ष

### तीन तीन गधों का बोझ

बादशाह और उसके दो पुत्रों को नदी में नहाने का शौक था। बीरबल भी कभी कभी उनके साथ नदी जाता था पर कभी नदी में नहाता नहीं था। बादशाह और उसके दो पुत्र एक दिन बीरबल के साथ नदी में नहाने गए और नदी में नहाने लगे और बीरबल नदी के किनारे जाकर बैठ गया और बादशाह और उनके पुत्रों के वस्त्रों की नदी किनारे रखवाली करने लगा और उनके वस्त्र अपने कंधों पर टांग लिये। बादशाह को बीरबल को हमेशा से छेड़ने की आदत रही है। नदी में खड़े खड़े बादशाह सलामत ने बीरबल को छेड़ा और कहा कि ऐसा लगता है कि तुम्हारे कंधों पर एक गधे का बोझ लदा है। बीरबल भला कब चुप रहने वाले थे तुरंत बोले “हुजूर एक नहीं दो नहीं तीन गधों का”। बादशाह यह सुनकर फौरन चुप्पी साध गए क्योंकि तीनों के वस्त्र बीरबल ने अपने कंधों पर लटका रखे थे।



## गांधीजी का अंतिम दिन - स्टीफन मर्फी

30 जनवरी 1948 का दिन गांधीजी के लिए हमेशा की तरह व्यस्तता से भरा था। प्रातः 3:30 को उठकर उन्होंने अपने साथियों मनु बेन, आभा बेन और बृजकृष्ण को उठाया। दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर 3:45 बजे प्रार्थना में लीन हुए। घने अंधकार और कँपकंपाने वाली ठंड के बीच उन्होंने कार्य शुरू किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दस्तावेज को पुनः पढ़कर उसमें उचित संशोधन कर कार्य पूर्ण किया। सुबह 4:45 बजे गरम पानी के साथ नींबू और शहद का सेवन किया। एक घंटे बाद संतरे का रस पीकर वे पत्र-व्यवहार की फाइल देखते रहे। चार दिन पहले सरदार पटेल द्वारा भेजा गया एक पत्र वे अकथनीय वेदना के साथ पढ़ते रहे। जिसमें अपने और नेहरू के आपसी मतभेद और मौलाना के साथ विवाद के कारण उन्होंने इस्तीफा देने के लिए गांधीजी से अनुमति माँगी थी। सेवाग्राम के लिए पत्र भेजने की सूचना वे किसी को दे रहे थे, उस वक्त मनुबेन ने पूछा कि यदि दूसरी फरवरी को सेवाग्राम जाना होगा, तो किशोर लाल मशरुवाला को लिखा गया पत्र न भेजकर उनसे मुलाकात ही कर लेंगे और पत्र दे देंगे। महात्मा का जवाब था “भविष्य किसने देखा है? सेवाग्राम जाना तय करेंगे, तो इसकी सूचना शाम की प्रार्थना सभा में सभी को देंगे ” । उपवास से आई कमजोरी को दूर करने के लिए उन्होंने आधे घंटे की नींद ली और खाँसी रोकने के लिए गुड़-लौंग की गोली खाई।



कंचन कुमारी  
बी. एड. प्रथमवर्ष

लगातार खाँसी आने के कारण मनु बेन ने दवा लेने की बात की, तो उन्होंने जवाब दिया “ऐसी दवा की क्या आवश्यकता ? राम-नाम और प्रार्थना में विश्वास कम हो गया है क्या?”

सुबह 7:00 बजे से उनसे भेंट करने वाले लोग आने लगे। राजेंद्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू और प्यारेलाल आदि के साथ चर्चा की। इसके बाद बापू ने मालिश, स्नान, बंगला भाषा का अभ्यास आदि कार्य पूरे किए। सुबह 9:30 बजे टमाटर, नारंगी, अदरक और गाजर का मिश्रित जूस पीया। उपवास के बाद अभी दूसरा आहार लेना शुरू नहीं किया था। दक्षिण अफ्रीका के सहयोगी मित्र रुस्तम सोराबजी सपरिवार आए और उनके साथ अतीत के स्मरणों में खो गए। थकान के कारण फिर आधे घंटे लेट गए। जागने पर उन्हें स्फूर्ति महसूस हुई। उपवास के बाद पहली बार बिना किसी के सहारे चले तो मनु बेन ने मजाक किया “बापू, आज आप अकेले चल रहे हैं, तो कुछ अलग लग रहे हैं। गांधीजी ने जवाब दिया “टैगोर ने गाया है, वैसे ही मुझे अकेले ही जाना है” ।

दोपहर 12:00 बजे बापू ने दिल्ली में एक अस्पताल और अनाथ आश्रम की स्थापना के लिए डॉक्टरों से चर्चा की और मिलने आए मुस्लिम प्रतिनिधिमंडल के साथ चर्चा कर सेवाग्राम जाने की इच्छा व्यक्त की। अपने प्रिय सचिव स्व. महादेव देसाई के जीवन चरित्र और डायरी के प्रकाशन के लिए नरहरि परिख की बीमारी को ध्यान में रखते हुए चंद्रशंकर शुक्ल को यह जवाबदारी सौंपना तय किया।

दोपहर करीब 1:30 बजे ठंड की गुनगुनी धूप में बापू नोआखली से लाया हुआ बाँस का टोप पहनकर पेट पर मिट्टी की पट्टी बाँधकर आराम कर रहे थे , उस समय नाथूराम गोडसे चुपचाप पूरे स्थान का निरीक्षण कर वहाँ से चला गया था। दोपहर 2:30 बजे मुलाकात का सिलसिला फिर शुरू हुआ। दिल्ली के कुछ दृष्टिहीन लोग आवास की माँग को लेकर उनके पास आए। शेरसिंह और बबलू राम चौधरी हरिजनों की दुर्दशा के लिए बात करने आए। सिंध से आचार्य मलकानी और चोइथराम गिडवानी वहाँ की स्थिति का वर्णन करने आए। श्री चांदवानी पंजाब में सिखों में भड़के आक्रोश और हिंसा के समाचार लाए। श्री लंका के नेता डॉ. डिसिल्वा अपनी पुत्री के साथ आए। उन्होंने 14 फरवरी को श्रीलंका की मुक्ति का संदेश दिया। डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने अपनी पुस्तक और फ्रेंच फोटोग्राफर ने फोटो एलबम उन्हें उपहार में दी। ‘टाइम मैगजीन’ के मार्गरेट बर्क व्हाइट से मुलाकात की और श्री महाराज सिंह ने एक विशाल सम्मेलन के आयोजन के लिए उनसे सलाह ली। शाम 4:15 बजे सरदार पटेल इस्तीफे के संबंध में सौराष्ट्र के राजनैतिक प्रसंगों पर चर्चा के लिए उनसे मिलने आए। सरदार पटेल के साथ खूब तन्मयता से बातचीत की ,लेकिन

बातचीत के दौरान उन्होंने चरखा चलाना जारी रखा। शाम का भोजन पूरा होए इसका भी ध्यान रखा। शाम 5 बजे प्रार्थना का समय हो रहा था , लेकिन सरदार से उनकी बातचीत पूरी नहीं हो पाई थी। मनु बेन और आभा बेन ने प्रार्थना में जाने के लिए संकेत किया। जिसका उन पर कोई असर नहीं हुआ। इसके बाद सरदार पटेल की पुत्री मणिबेन ने हिम्मत करके समय की पाबंदी की ओर उनका ध्यान दिलाया, तो गांधीजी तेजी से उठ गए। देर होने से नाराज हुए गांधीजी ने अपनी लाठी समान लाइली मनु -आभा से नाराजगी व्यक्त की।

प्रार्थना सभा में प्रवेश करते समय उन्होंने मौन धारण कर रखा था और मनु-आभा के कंधों का सहारा लेकर तेज गति से चलते हुए गांधीजी को रास्ता देने के लिए लोग एक तरफ हट जाते थे। कुछ लोग नमस्कार की मुद्रा में गांधीजी दर्शन कर कृतार्थ भाव अनुभव करते थे। प्रार्थना के लिए जाते समय रास्ते में अचानक एक व्यक्ति उनके सामने आ खड़ा हुआ। उसके और गांधीजी के बीच मात्र तीन कदम का फासला था। उसने नीचे झुककर प्रणाम की मुद्रा में सहजता से हाथ झुकाया और कहा “ नमस्ते गांधीजी” मनु बेन ने उसे रास्ते से हट जाने के लिए कहा कि तुरंत ही उसने बलपूर्वक मनुबेन को एक ओर धकेल दिया। फिर उसने दोनों हाथों के बीच रखी पिस्तौल गांधीजी की ओर कर एक के बाद एक तीन गोलियाँ दाग दी। महात्मा गांधी के श्वेत वस्त्र लहुलुहान हो गए थे। वंदन की मुद्रा में झुका बापू का शरीर धीरे-धीरे आभा बेन की तरफ ढहता गया। गोडसे की तीन गोलियों का तीन अक्षर का उनका प्रतिभाव था “हे राम!” उस समय घड़ी में शाम के 5 बजकर 17 मिनट हो रहे थे।

## काला रंग



अनु  
बी. एड. प्रथमवर्ष

काला कहता है जग जिसको,  
काला रंग वही रंग नहीं,  
काले की संगत करने से,  
चढ़ता दूजा रंग नहीं।  
काले क्या जग में हुए नहीं ,  
क्या कालो का सम्मान नहीं ,  
काले ही घनश्याम हुए ,  
क्या जग करता मान नहीं।।  
काली श्याम घटा नभ छाया,  
घातक को जीवन देती है,  
काली कमली भी देखी है,  
जो वृक्षों को सह लेती है।  
ये मंदिर है! काले पत्थर ,  
मित्रों तुमकों ध्यान नहीं ,  
मत कहना बिना सोचे-समझे,  
कि काला कोई इन्सान नहीं।।



## हिमालय



भाविक चौधरी  
बी. एड. द्वितीयवर्ष

युगयुगसे है अपने पथ पर  
देखो कैसा खड़ा हिमालय।  
डिगता कभी न अपने प्रण से  
रहता प्रण पर अड़ा हिमालय!  
जो जो भी बाधायें आईं  
उन सब से ही लड़ा हिमालय  
इसीलिए तो दुनिया भर में  
हुआ सभी से बड़ा हिमालय।  
अगर न करता काम कभी कुछ  
रहता हरदम पड़ा हिमालय,  
तो भारत के शीश चमकता  
नहीं मुकुट-सा हिमालय।  
खड़ा हिमालय बता रहा है  
डरो न आंधी पानी में,  
खडे रहो अपने पथ पर  
सब कठिनाई तूफानों में।  
डिगो न अपने प्रण से तो  
सब कुछ पा सकते हो प्यारे!  
तुम भी उंचे हो सकते हो  
छू सकते हो नभ के तारे।  
अचल रहा जो अपने पथ पर  
लाख मुसीबत आने में,  
मिली सफलता जग में उसको  
जीने में मर जाने में।



## हे धरा ये पृथ्वी

हे धरा, ये पृथ्वी भी  
यहीं प्यार से पाए हैं, इसने नाम कई

धरती माँ कहकर पुकारते हैं इसे सभी  
हर भाग है इसका अनुपम

हो फिर हरी-भरी भूमि  
या मरूस्थल रेतीली तपती

कहीं पर बहती है शीतल नदी की धारा  
कहीं पर इसके अंदर जलता है आग का गुब्बारा

मौसम का भी मिलता है अलग-अलग अंदाज यहाँ  
माटी इसकी चन्दन सी जिसे प्रकृति ने खुद संवारा

देती है मौके कई साकार करने को अपनी कल्पनाएँ  
करके समर्पित स्वयं को जीवन पर.....

इसने बड़े लाड से जीवों को पुचकारा  
है जितनी शांत और सरल ये.....

उतनी ही हो जाती है विध्वंसक और विकराल  
जब भी इसने गुस्से से हुंकारा



फिरोजां यूनुस  
बी. एड. द्वितीय वर्ष

हर मजूर इसका बन जाता है  
मातम और तबाही का खेला सारा

हर भूभाग है इसका भिन्न एक दूसरे से  
भांति-भांति के रंग-रूपों से इसने है अपनी दुनिया  
सजाई

बर्फीले पहाड़ों की कंदराएँ हो या चट्टानी गुफाएँ हो  
चहकते पंछी और तरह-तरह के जीव-जन्तुओं की

अल्हड अटखेलियों को इसने है प्यार से स्वीकार  
नहीं किया भेद कैसा भी हर किसी का किया स्वागत है  
यहाँ

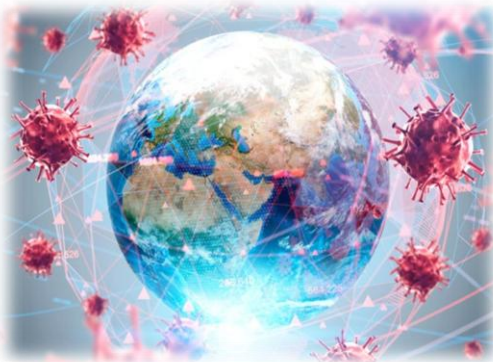
है जीवन यहीं है स्वर्ग भी यहाँ है  
हर दास्ताँ शुरू यहीं और खत्म भी यहीं है

प्यार से जो भी इससे पेश आया,  
इसने उस पर अपना सर्वस्व वारा  
हे धरती, ये इसके आँचल में ही है संसार समाया।



## CoronaVirus Pandemic

Corona Virus disease (COVID-19) is an infectious disease caused by the SARS-CoV-2 virus. Most people infected with the virus will experience mild to moderate respiratory illness and recover without requiring special treatment. However, some will become seriously ill and require medical attention. Older people and those with underlying medical conditions like cardiovascular disease, diabetes, chronic respiratory disease, or cancer are more likely to develop serious illness. Anyone can get sick with COVID-19 and become seriously ill or die at any age.



**Mrs. Meenu Suchdava**  
**Assistant Professor**

As we all know that for the last five years we have been battling with the corona virus pandemic. Many people have lost their lives due to this disease. Many people's families have been ruined, many children have been orphaned. Who will think about them?

Is it not our duty to think of those people, to help the children who have become orphans, People who lost their close relatives; Will they always be in grief? Shouldn't we console those people?

Due to this disease many people have lost their self power, some

people have disease in their mind, and some people are in panic. Shouldn't we boost their morale? Only a human being can help other human being. We should show our humanity.

We have got a lot to learn during this Corona period. First of all, we have learned that health is wealth. While, we all already know this but never pay attention to it. The corona pandemic has taught us that we should first take care of our health. We should increase our immunity so much that no disease can attack us and even if the disease comes, our body can survive it.

We have seen that time is never one's belongings. If someone has good time today, It can be bad, tomorrow.

**“Life is like a drop of human  
But the ego is bigger than the  
ocean  
No king walks,  
No ace moves,  
Its game**

**Of your own deeds**

**It is only a coin of karma”**

So In good times we should not be proud and we should not lose heart in bad times. We should always help each other selflessly.

**“Sharing his share of happiness  
whoever smiles**

**Believe it; he has never been able  
to beat by any sorrow.”**



## Victimhood



**Ms. Manoj Kumar**  
**Assistant Professor**

Negative mindsets such as victim mentality are destructive. It places blame on other people and circumstances for any unhappiness felt within. Those are having victim mentality, view life through a narrow prospective of pessimistic perceptions, believing whatever occurs in life is the result of outside causes only. The importance of Inner reflection is never considered. Being a victim means absolving themselves of blame. A victim mentality most often enjoys the attention, sympathy and validation from others. When we trapped in victimhood, the focus becomes on how we are, rather than on how powerful we are.



As no one is born with a victim mentality, no one is exempt from playing the victim role either.

In fact, every person alive has played the victim role more than once in their lives. So, how does one free from this self-defeating, pessimistic type of programming, most of which developed in childhood?

It all begins at home with your perceptions how you view yourself. Do you perceive yourself as a survivor or a victim?

Survivors embrace and face life and flow with it. They live in the present and take control of their lives. They are fully aware that they are responsible for what occurs. They know that by taking

responsibility, they can make better their lives.

But, a victim's personality drowns of self-pity and argues with life. They dwell in the past, believing they are helpless to change circumstances. They live defensively without making progress because their perceptions tell them they are powerless. This mentality negatively affects every area of life - professional and personal. Those who see themselves as a failure are dwelling in victimhood because failure only comes to those who give up.

If we really want to shift out of the victim mentality, we must first accept it. We must change our attitude and accept that "change begins with me." We must embrace survival and take action steps to make our life somehow better. To empower ourselves, we must constantly state "I can" and "I will" and cease demeaning statements and

beliefs such as "I can't" and "I won't". And, we must embrace gratitude - the greatest of attitudes. Daily, we need to take time to reflect on all the things that make us happy and better, on all the things that are going well in our life. Keeping our energy focused on positive situations helps to counteract the victim mentality.

In the end, we must honour ourselves with the same degree of respect and love that we try to give others. It is only then that we will shift from victimhood to survival mode in our minds and actions. Truth is, we can't control others' actions or every circumstance that comes in our lives, but we can control our responses. It is a choice to be victims or to find new options to lead our life in a better way. The challenges that come our way should not be viewed as reasons to give up, but as challenges to meet.



## Education without Moral is like a Ship without a Compass

C.S. Lewis said to the world: "To educate a man without morals will only make him a cleverer devil." Moral values are declining around the world. A number of values are being held and pursued in today's society, including dishonesty, disrespect, intolerance, lack of cooperation, profit-oriented relationships, profaneness and abuse of human dignity, and increased interest in committing crimes and committing injustices.

People have turned to materialism as the primary pursuit of life. Luxury goods are our way of capturing happiness and satisfaction. Advertising attracts young people, which results in them possessing attractive things, leading to deterioration of moral values.



**Dr. Suja George Stanley**  
**Assistant Professor**

A lot of absence of morals is seen in the political system of our country. In the present scenario young people sent their parents to old age homes, which raised them to become successful in life. It has become a form of pride for people today to tell lies, engage in ungodly practices, and embellish various forms of criminal activity.

The root of this issue is not a recent phenomenon. Its trace can be found in many societies throughout history but its influence is most apparent in modern times. Society



has witnessed a fall in moral standards and an increased interest in pleasure and enjoyment as opposed to more serious things. A lack of moral discipline has resulted in indiscipline at all levels in society, and its results can be seen in our lackadaisical attitude toward work, our willingness to cheat and embezzle, and our disrespect for human life.

Moral values are inculcated in us through the agency of education. It is the school that is the second home of children where they learn everything. Their environment shapes each and every individual into responsible citizens of their country. If good education is provided, good values are inculcated among students. A student receive constructive guidance and praise from teacher show more engagement in learning better in class and achieve higher levels in all field of his her life. Just as a plant if watered properly develops into a strong tree but if the plant is not

watered properly it will lead to the underdevelopment of the plant. A human with good moral values has a strong conscience and the one with weakness is on the path of deterioration.

A person's moral values play an important role in bringing about the right balance in life; education must also emphasize moral values. Moral values help us distinguish between what's right and wrong, good or bad for you as well as society. Morality



deals with developing the higher values of life and with becoming a better person. As a result of moral values, humans are able to make better decisions, become more responsible and cooperative, which enhances the development of

individuals and society. Gaining materially does not lead to happiness. But if we learned the universal values of morality we would be good to our neighbors and would ultimately begin to love our enemies.

To develop our spiritual side it is important to start the basic moral instruction about spirituality at an early age. Moral values guide behavior and give meaning to existence, which enables us to follow the correct and right path. The stability and growth of human society is based upon and sustained by the right type of values. It is important that the spiritual and ethical values of life are taught properly.

Children have to be taught right from wrong. If the seed of morality is sown in the hearts of children at

the beginning of their lives, there would be many people who will care about other human beings. They have to be taught how to make good decisions. If we can teach children to make decisions then when a problem arises in life, they will make the right choice. We also need to teach children that their decisions not only affect them, but they affect many other human beings all around them. If children are taught about love for God, love for other human beings, and love for animals, just as St. Francis of Assisi taught then the children will grow up with those values.





## जरूरी में जरूरी

मानव की गरिमा के खातिर मानव के अधिकार जरूरी।

लेकिन इनके साथ उठाना कर्तव्यों का भार जरूरी॥

संविधान, कानून, नियम, उपदेश महान विचार जरूरी।

लेकिन सिर्फ न सैद्धान्तिक हो अमल और व्यवहार जरूरी॥

खेती-बाड़ी, भवन-इमारत, सड़कों का विस्तार जरूरी।

भूल न जाना वृक्ष लगाना धरती का श्रृंगार जरूरी॥

बहुत समस्याएँ फैली है इन सब का उपचार जरूरी।

जनसंख्या है सबका कारण, है छोटा परिवार जरूरी॥

अपने देश को श्रेष्ठ समझकर मातृभूमि से प्यार जरूरी।

साथ-साथ यह बात समझ लो यह सारा संसार जरूरी॥

सरल-सफल निर्वाह हेतु श्रम, रोजगार, व्यापार जरूरी।

लेकिन अपने साथ-साथ ही औरों का उपचार जरूरी॥

स्वास्थ्य हेतु व्यायाम, योग, औषधि, पौषक-आहार जरूरी।

पर खुश रहकर खुशी बाँटकर तनावसे उद्धार जरूरी॥

बुद्धि, विवेक, तर्क, विश्लेषण, वृहद ज्ञान-भण्डार जरूरी।

इस चक्कर में भूल न जाना आत्मज्ञान का सार जरूरी॥

प्रगति, विकास, सभ्यता, संस्कृति, प्रजातन्त्र सरकार जरूरी।

इनके लिए चाहिए- उत्तम शिक्षा का आधार जरूरी॥



अक्षिता त्यागी



## नेताजी सुभाषचंद्र बोस का जीवन-परिचय



मन्नत जैन

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में कटक के एक संपन्न बंगाली परिवार में हुआ था। बोस के पिता का नाम “जानकीनाथ बोस” और माँ का नाम “प्रभावती” था। जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वकील थे। प्रभावती और जानकीनाथ बोस की कुल मिलाकर 14 संतानें थीं। जिसमें 6 बेटियाँ और 8 बेटे थे। सुभाष चंद्र उनकी नौवीं संतान और पाँचवें बेटे थे। अपने सभी भाइयों में से सुभाष को सबसे अधिक लगाव शरदचंद्र से था। नेताजी ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई कटक के रेवेंशॉव कॉलेजिएट स्कूल में हुई। तत्पश्चात् उनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रेजिडेंसी कॉलेज और स्कॉटिश चर्च कॉलेज से हुई। बाद में भारतीय प्रशासनिक सेवा ;इण्डियन सिविल सर्विस की तैयारी के लिए उनके माता-पिता ने बोस को इंग्लैंड के केंब्रिज विश्वविद्यालय भेज दिया।

अंग्रेजी शासन काल में भारतीयों के लिए सिविल सर्विस में जाना बहुत कठिन था किंतु उन्होंने सिविल सर्विस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया। 1921 में भारत में बढ़ती राजनीतिक गतिविधियों का समाचार पाकर बोस ने अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली और शीघ्र भारत लौट आए। सिविल सर्विस छोड़ने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़ गए। सुभाष चंद्र बोस महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों से सहमत नहीं थे। वास्तव में महात्मा गांधी उदार दल

का नेतृत्व करते थे । वहीं सुभाष चंद्र बोस जोशीले क्रांतिकारी दल के प्रिय थे।

महात्मा गाँधी और सुभाष चंद्र बोस के विचार भिन्न-भिन्न थे लेकिन वे यह अच्छी तरह जानते थे कि महात्मा गाँधी और उनका मकसद एक है । यानी देश की आजादी। सबसे पहले गाँधीजी को राष्ट्रपिता कह कर नेताजी ने ही संबोधित किया था। 1938 में

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद उन्होंने राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन किया।



यह नीति गाँधीवादी आर्थिक विचारों के अनुकूल नहीं थी।

1939 में बोस पुन एक गाँधीवादी प्रतिद्वंदी को हराकर विजयी हुए। गांधी ने इसे अपनी हार के रूप में लिया। उनके अध्यक्ष चुने जाने पर गांधी जी ने कहा कि बोस की जीत मेरी हार है और ऐसा लगने लगा कि वह कांग्रेस वर्किंग

कमिटी से त्यागपत्र दे देंगे। गाँधी जी के विरोध के चलते इस “विद्रोही अध्यक्ष ” ने त्यागपत्र देने की आवश्यकता महसूस की। गांधी के लगातार विरोध को देखते हुए उन्होंने स्वयं कांग्रेस छोड़ दी।



इस बीच दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया। बोस का मानना था कि अंग्रेजों के दुश्मनों से मिलकर आजादी हासिल की जा सकती है। उनके विचारों के देखते हुए उन्हें ब्रिटिश सरकार ने कोलकाता में नज़रबंद कर लिया लेकिन वह अपने भतीजे शिशिर कुमार बोस की सहायता से वहां से भाग निकले।

वह अफगानिस्तान और सोवियत संघ होते हुए जर्मनी जा पहुंचे। सक्रिय राजनीति में आने से पहले नेताजी ने पूरी दुनिया का भ्रमण किया। वह 1933 से 36 तक यूरोप में रहे। यूरोप में यह दौर था हिटलर के नाजीवाद और मुसोलिनी के फासीवाद का। नाजीवाद और फासीवाद का निशाना इंग्लैंड था। जिसने पहले विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी पर एकतरफा समझौते थोपे थे। वे उसका बदला इंग्लैंड से लेना चाहते थे।

भारत पर भी अंग्रेजों का कब्जा था और इंग्लैंड के खिलाफ लड़ाई में नेताजी को हिटलर और मुसोलिनी में भविष्य का मित्र दिखाई पड़ रहा था। दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। उनका मानना था कि स्वतंत्रता हासिल करने के लिए राजनीतिक गतिविधियों के साथ-साथ कूटनीतिक और सैन्य सहयोग की भी जरूरत पड़ती है।

सुभाष चंद्र बोस ने 1937 में अपनी सेक्रेटरी और ऑस्ट्रियन युवती एमिली से शादी की। उन दोनों की एक अनीता नाम की एक बेटी भी हुई जो वर्तमान में जर्मनी में सपरिवार रहती हैं। नेताजी हिटलर से मिले। उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत और देश की आजादी के लिए कई काम किए। उन्होंने 1943 में जर्मनी छोड़ दिया। वहां से वह जापान पहुंचे। जापान से वह सिंगापुर पहुंचे। जहां उन्होंने कैप्टन मोहन सिंह द्वारा स्थापित आजाद हिंद फ़ौज की कमान अपने हाथों में ले ली।

उस वक्त रास बिहारी बोस आजाद हिंद फ़ौज के नेता थे। उन्होंने आजाद हिंद फ़ौज का पुनर्गठन किया। महिलाओं के लिए रानी झांसी रेजिमेंट का भी गठन

किया लक्ष्मी सहगल जिसकी कैप्टन बनी। “नेताजी” के नाम से प्रसिद्ध सुभाष चंद्र ने सशक्त क्रान्ति द्वारा भारत को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से 21 अक्टूबर, 1943 को “आजाद हिन्द सरकार” की स्थापना की तथा “आजाद हिन्द फ़ौज” का गठन किया। इस संगठन के प्रतीक चिह्न पर एक झंडे पर दहाड़ते हुए बाघ का चित्र बना होता था। नेताजी अपनी आजाद हिंद फ़ौज के साथ 4 जुलाई 1944 को बर्मा पहुंचे। यहीं पर उन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा “तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा” दिया। 18 अगस्त 1945 को टोक्यो (जापान) जाते समय ताइवान के पास नेताजी का एक हवाई दुर्घटना में निधन हुआ बताया जाता है। लेकिन उनका शव नहीं मिल पाया। नेताजी की मौत के कारणों पर आज भी विवाद बना हुआ है।



## वृक्षो से सीखो

वृक्षों से कुछ सीखो मानव,  
हँसना और हँसाना।  
अवनि के आँचल में मानव,  
ढेरों वृक्ष लगाना।  
वृक्षों के पत्तों से सीखो,  
हरित क्रान्ति लाना।  
पेड़ों के डालों से सीखों,  
नतमस्तक हो जाना।  
पेड़ों के फूलों से सीखो,  
हरदम ही मुस्काना।  
वृक्षों की कोमल कलियों से,  
सीखो पल-पल बढ़ जाना।  
वृक्षों के लो सीख तने से,  
धीर वीर बन जाना।  
दृढ़ रहो निज जीवन पथ पर,  
सीख जड़ों से जाना।  
वृक्षों की छालों से सीखो,  
हर संकट सह जाना।  
पीड़ा की घड़ियों में भी तुम,  
कभी नहीं घबराना।



आरोही

पेड़ों से हमदर्दी का कुछ,  
सबक सीख तुम जाना।  
अन्धाधुन्ध कटाई का मत,  
कर में खड़ग उठाना।  
वृक्षों के संरक्षण का अब,  
ध्यान तुम्हें कुछ लाना।  
कदम-कदम पर वृक्ष लगाकर,  
हरियाली चहुँ ओर फैलाना।  
वृक्षों के हर अंग-अंग का,  
मानव लाभ उठाना।  
सुख-समृद्धि हरियाली का,  
घर-घर दीपक जलाना।

## सफलता की मंजिल



हिमांशी तोमर

घड़ी की सुई पल-पल चलकर हमको याद दिलाती है।  
जो लेकर संकल्प चले मंजिल उसको मिल जाती है।  
जग को रोशन करने वाला अंधकार को खाता है।  
जलकर सारी रात अन्त में नया सवेरा आता है।  
पाना है कुछ नाम जगत में तो रखो भावना जगने की।  
मंजिल तुमको मिल जायेगी करो साधना चलने की।  
सुख-दुख दोनों सगे भ्राता हैं आते हैं बारी-बारी।  
दुख देता आंखों में आंसू सुख देती है किलकारी।  
सुख तुमको मिल जायेगा यदि दुख को गले लगाओगे।  
अगर रहे सन्तोष हृदय में तभी मधुर फल पाओगे।  
सपने यदि साकार बनाने करो वन्दना जगने की।  
मंजिल तुमको मिल जायेगी करो साधना चलने की।  
दूजे की जो छीन के खाता पापी वही कहलाता है।  
खुद अपनी भटकी राहों में भाग्य को दोष लगाता है।  
छीनने का अगर शौक तो रातों के आंसू छीनो।  
जीने का अगर शौक तो रखो कामना मरने की।  
मंजिल तुमको मिल जायेगी करो साधना चलने की।  
धीमी-धीमी खुशबू लेकर खिलता गुलाब कांटों में।  
जीवन का सन्देश है देता अपनी मौन बातों में।  
कुछ करने की चाह अगर है रखो कामना तपने की।  
मंजिल तुमको मिल जायेगी करो साधना चलने की।

## वक्त नहीं



वंशिका शर्मा

हर खुशी है लोगों के दामन में,  
पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं।  
दिन रात दौड़ती दुनिया में,  
जिन्दगी के लिए वक्त नहीं।  
माँ की लोरी का अहसास तो है,  
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं।  
सारे रिश्तों को तो हम मार चुके हैं,  
अब उन्हें दफनाने का भी वक्त नहीं।  
सारे नाम मोबाइल में है,  
पर कॉल के लिए वक्त नहीं।  
गैरों की क्या बात करें,  
अब अपनों के लिए ही वक्त नहीं।  
आँखों में नींद भरी,  
पर सोने के लिए वक्त नहीं,  
जिन्दगी है बहुत बड़ी  
पर जीने के लिए वक्त नहीं



## लहर नहीं जहर हूँ मैं

पेप्सी बोली कोका कोला,  
भारत का इन्सान है भोला,  
विदेश से मैं आई हूँ  
साथ में मौत को लाई हूँ।  
लहर नहीं जहर हूँ मैं ,  
गुर्दों पर बढ़ता कहर हूँ मैं ,  
मेरी पीएच दो पॉइन्ट साता।  
मुझमें गिरकर गल जाये दांत,  
जिंक आरसैनिक लेड हूँ मै,  
मुझसे बढ़ती एसिडिटी,  
फिर क्यों पीते भैया-दीदी,  
ऐसी मेरी कहानी है ,  
मुझसे अच्छा तो पानी है ,  
दूध दवा है , दूध दुआ है,  
मैं जहरीला पानी हूँ।  
हाँ दूध मुझसे सस्ता है,  
फिर पीकर मुझको क्यों मरता है,  
380 करोड कमाती हूँ,  
विदेश में ले जाती हूँ।  
शिव ने भी ना जहर उतारा ,  
कभी अपने कण्ठ के नीचे ,  
तुम मुर्ख नादान हो भारी ,  
पडे हुए हो मेरे पीछे।  
देखो इन्सान लालच में हुआ अन्धा,  
बना लिया है मुझको धन्धा,  
मैं पहुची हूँ आज वहाँ पर,  
पीने का नहीं पानी जहाँ पर।



प्रभा कर्दम

छोडो नकल अब अक्ल से जियो ,  
जो कुछा पीना सँभलकर पियो ,  
इतना रखना अब तुम खयाल,  
घर आये जब मेहमान।  
इतनी तो तुम रस्म निभाना,  
उनको भी कुछ कसम दिलाना,  
दूध, जूस, गाजर रस पिलाना,  
डालकर छाछ में जीरा पिलाना।  
अन्नानास , आम का अमृत,  
वेदाना , बेलफल का शरबत,  
स्वास्थ्यवर्धक नींबू का पानी ,  
जिसका नहीं है कोई सानी।  
तुम भी पीना और पिलाना,  
पेप्सी नहीं अब घर में लाना,  
अब तो समझो मेरे यार,  
मेरे बचे स्टॉक से करो टॉयलेट साफ,  
नहीं तो होगा वो अन्जाम,  
कर दूंगी मैं काम तमाम।



## नारी होने का पुरस्कार

उन नौ दिनों में न जाने तमन्ना ने कितने नये सपने संजो लिए थे। कला के प्रति समर्पित होने का संकल्प भी ले लिया। अपने अरमानों की कश्ती का नया किनारा भी तमन्ना ने ढूँढ़ लिया था। अब सास यदि कुछ कह-सुन भी लेती तो उसे कुछ महसूस नहीं होता था।

“आपको हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि आपकी कहानी टूटती बिखरती नारी” को राष्ट्रीय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। हमारा आयोजन विभाग पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन कर रहा है, आपसे नम्र अनुरोध है कि आप यथा समय कार्यक्रम में पधारें तथा पुरस्कार ग्रहण कर हमें अनुग्रहित करें...”। इस निमंत्रण-पत्र को तमन्ना ने कई बार उलट-पलट कर देखा। कहीं डाकिया गलती से जल्दबाजी में किसी और का पत्र तो नहीं डाल गया। तमन्ना बार-बार पत्र को पढ़ती रही। पता बिल्कुल ठीक था, नाम भी उसका ही था। अब वो बिल्कुल आश्चर्यचकित हो गई। उसे यकीन हो गया कि वो कोई सपना नहीं देख रही, बल्कि सब यथार्थ और सच्चाई है। इस अप्रत्याशित समाचार से उसके हृदय की एक-एक शिरा में अथाह उल्लास का जल रूपी समुद्र उमड़-धुमड़ कर अपनी सतह को पाने के लिये बेचैन हो उठा। तमन्ना चाहती थी कि किसी को अपनी खुशी का साझीदार बना सके। उसने घर में चारों ओर नज़रें दौड़ाईं। उसकी सास कीर्तन में गई हुई थी।



स्वाति बंसल

उसने पत्र को कई बार चूमा तथा सहेजकर रख दिया और अपने साथ वाले मकान की सहेली को ये खुशखबरी सुनाने चली गई।

न जाने क्यों, उसकी सहेली ने कुछ विशेष प्रसन्नता नहीं दिखाई, जिसकी वो आशा कर रही थी। शायद वो ये समाचार सुनकर ईर्ष्या से जल-भुन गई होगी। पर खुशी और उत्साह से लबरेज तमन्ना ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह अपनी सफलता के नशे में ही खोई रही। घर आकर उसने देखा, मुन्ना जाग गया है। उसने उसे उठाकर ज़ोर से भींच लिया और लाड़ करने लगी। कुछ देर में उसकी सास कथा से लौट आयी। उसने प्रसाद लेते हुए बड़े उत्साह से अपने पुरस्कार मिलने की बात सास को बताई। उन्होंने प्रतिक्रिया स्वरूप मुंह बिचकाकर आजकल के ज़माने और आजकल की बहू-बेटियों को कोसते हुए कटाक्ष किया “क्या ज़माना आ गया है, अब घर की बहू-बेटियां जलसों में जाकर पराये मर्दों के साथ फ़ोटो खिंचवाएंगी” और दिन होता तो तमन्ना जल-भुनकर राख हो जाती, पर उस दिन उसने सब अनसुना कर



दिया और सोचने लगी, “ घरवाले भले ही मेरी कद्र न करें, लेकिन बाहरवाले तो मेरी और मेरी कला की कद्र करते हैं। जब प्रसिद्धि चारों ओर फैलेगी, अपार धन घर में आएगा, तो ये लोग ही मेरी प्रशंसा करते नहीं थकेंगे। अब तो उसे एक नई रोशनी मिल गयी है। अपनी असाधारण कला का सम्मान मिल गया है। अब उसी के प्रकाश में सारा जीवन निकाल देगी। पहले तो मैं सिर्फ कविताएं लिखती थी, जो अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपती थीं। लेकिन कहानी तो मैंने पहली बार ही भेजी थी, जिसे इतनी बड़ी पुरस्कार राशि मिली है। अब मैं खूब लिखा करूंगी।

इन्हीं सब मनोभावों और उत्साह से उसके जीवन में नवीनता आ गई। शाम को पति के वापस आने का वो बेसब्री से इंतजार करने लगी। पति के आने पर उसने बड़े उत्साह से वो निमंत्रण-पत्र उन्हें दिखाया। उन्होंने पढ़ा और वापस तमन्ना को थमा दिया। तमन्ना बोली, “उस दिन आप चार बजे घर आ जाना। साढ़े चार बजे चलेंगे, तब कहीं पांच बजे पहुंच पाएंगे” उसके पति ने कहा, “ हां, देखा जाएगा उस दिन, अभी तो बहुत दिन हैं”।

नौ दिन बड़े उत्साह से न जाने कैसे गुजर गए पता ही नहीं चला। उन नौ दिनों में न जाने तमन्ना ने कितने नये सपने संजो लिए थे। कला के प्रति समर्पित होने का संकल्प भी ले लिया। अपने अरमानों की कशती का नया किनारा भी तमन्ना ने ढूंढ़ लिया था। अब सास यदि कुछ कह-सुन भी लेती तो उसे कुछ महसूस नहीं होता था। अपना बेटा अब उसे पहले से कहीं ज्यादा प्यारा लगने लगा। 18 तारीख आ गयी। कल ही तो जाना है। कौन सी साड़ी निकाले, सोचते हुए

तमन्ना अलमारी के पास जाकर खड़ी हो गयी। ये चिकन की इम्पोर्टेड साड़ी निकाल ले, अच्छा हल्का कलर है या ये शिफॉन की साड़ी, नहीं-नहीं, ये बॉर्डरवाली कैसी रहेगी। ये शाम को ठीक लगेगी, लेकिन इसका प्रिन्ट बहुत गहरा है। शिफॉन वाली ही ठीक रहेगी, इसके साथ फिर ये सफेद ब्लाउज भी चल जाएगा शिफॉन। लेकिन ये कुछ पीला-सा पड़ गया है। हां, इसे नील लगा लें, तो एकदम चमक जाएगा। और बाल.....बाल कैसे बनाए, जूड़ा बनाए या चोटी कर ले... नहीं जूड़ा नहीं, एक ढीली-सी लंबी चोटी ठीक रहेगी और बस थोड़ा-सा मेकअप कर लेगी। ज्यादा तड़क-भड़क मुझे वैसे भी पसंद नहीं है। एक



नेता के साथ फोटो भी खिंचेगा, पुरस्कार लेते हुए अखबार में भी वो फोटो आएगा, कितना अच्छा लगेगा। सब उसके फोटो देखेंगे। सब जगह उसी की चर्चा होगी। ये सोचकर वो फूली नहीं समा रही थी

।उसने अपने कपड़े धोकर प्रेस कर तैयार कर लिए थे ।  
उसके अंदर रह-रहकर उमंगें उठ रही थीं । तमन्ना का  
भावुक मन अपनी मंजिल पाने के उत्साह को जताना  
चाहता थाण । तमन्ना ने सिर धो लिया , ताकि बाल  
चिपके नहीं । कल इस समय वह समारोह में होगी ।  
बड़े-बड़े लोग वहां होंगेण । उसे सोने का मैडल  
मिलेगा। उसे संभाल के रखेगी । कल को उसका बेटा  
बड़ा होगा । वो भी तो देखेगा और गर्व से फूला नहीं  
समाएगा अपनी लेखिका मां पर ।

आज 19 तारीख है । तमन्ना ने सुबह ही अपने  
पति से कह दिया था । चार बजे, सवा चार बजे, पौने  
पांच हुए, पर पति रोज़ की तरह सवा पांच बजे ही आए  
। पति ने आते ही अनभिज्ञता दिखाते हुए पूछा- “अरे,  
बड़ी सजी-धजी लग रही हो । कहां की तैयारी है  
ये....” । “ आज 19 तारीख नहीं है । मैंने सुबह ही  
आपसे कहा था चार बजे आने को.... खैर , हम अब  
भी जा सकते हैं”। “अरे छोड़ो, अब क्या जाना, थका-  
मांदा द्रष्टर से आया हूं.... और वहां तक जाने में  
चालीस रुपये का पेट्रोल फुंक जाएगा । पेट्रोल वैसे ही  
नहीं मिल रहा है... और फिर मां को भी ये सब पसंद  
नहीं है.... आगे से बंद करो ये लिखना-लिखाना । क्या  
फ़ायदा मां को बेकार नाराज़ करने से... और ये सब  
वैसे भी आवारा औरतों और मर्दों का काम है , जो  
किसी के चक्कर में फंस जाते हैं और फिर लैला-मजनूं  
से लेखक-लेखिका बन जाते हैं । चलो, चलकर चाय-  
नाश्ता लाओ , बहुत ज़ोर से भूख लगी है ”। ये सब  
सुनते ही तमन्ना तिलमिला उठी ।

हृदय में भावनाओं की हृदय-विदारक चीत्कार हुई  
। धमनियों का रक्त जहां का तहां जम गया । आंसुओं

का सैलाब अपनी कला के अपमान पर सब्र का बांध  
तोड़ टप-टप करता आंखों की कोरों से निकलता हुआ  
बहकर चेहरे पर आ गया । तमन्ना को लगा जैसे उसके  
स्वच्छ कला रूपी बहते जल को किसी ने निर्ममता  
और क्रूरता से बांध दिया हो, केवल सड़ जाने के लिए  
तथा कीचड़ भी उछाल दिया हो औरत तथा कला की  
निर्मलता पूर्ण तमन्ना की सारी तमन्नाएं ,इच्छाएं  
आंसुओं में बह गईं । शरीर लगभग जड़ हो गया ।  
थोड़ी देर में पति की आवाज़ पर तमन्ना ने अपने जड़  
शरीर को ज़बरन उठाया और चल पड़ी रसोई की ओर  
तमन्ना को लगा भारतीय समाज में स्वार्थी पुरुष समाज  
की हीन मानसिकता में जन्म लेने का उसे पुरस्कार  
मिल गया ।



## निर्बल की सहायता धर्म है।

हाँ हैलो.....ठीक है आपका काम हो जायेगा। आ जाऊंगा। ले चलूंगा। आदि सहमति भरे वाक्य उसकी जुबान पर हमेशा रहते हैं। और मोबाइल पर वह कभी किसी को किसी काम के लिए मना नहीं करता, यही पहचान है उस नवयुवक नौजवान की, जो छरहरे शरीर का स्वामी सौम्यता की प्रतिमूर्ति है, चन्द्रमा जैसी शीतल मोहक मुस्कान उसके होठों पर हमेशा बिखरी रहती है। और छोटे बच्चों के प्रिय भईया जिसे सब सचिन कहते हैं। मैं इस बालक को कई वर्षों से जानती हूँ। और कभी उसके मुँह से मैंने किसी के काम के लिये मना करते हुये नहीं देखा, जिसने भी कहा उसी का कार्य पूर्ण मनोयोग के साथ करता है और कई बार उसे इसकी कीमत भी चुकानी पड़ती है। ऐसे उसके दोस्तों ने मुझे बताया पता नहीं उससे एक अजीब सा लगाव हो गया है न जाने कौन सा गुण उसमें है जो उसे वर्तमान युवाओं से अलग करते हैं। शायद पता चल जाये पर कहते हैं कि समय से पूर्व कोई कार्य नहीं होता और हुआ भी यही।

अभी पिछले सप्ताह की घटना है कि वह शान्ति सेमेरे पास रुका, खूब बातचीत की और मुझे उससे कहना पड़ा कि अपना मोबाईल बन्द कर दो फिर वार्तालाप करेंगे। मैंने उससे पूछा आपको दूसरे के काम करते हुये परेशानी नहीं होती तो उसने हंसते हुये कहा कि जो आनन्द दूसरों की सेवा करने में मिलता है वह कहीं और नहीं मिलता।



नीतू गोस्वामी

मैं तो यही चाहती हूँ कि जितना सामर्थ्य मुझे भगवान ने दिया है उसका सदुपयोग दूसरों लिये करती रहूँ।

अब आप सोच रहे होंगे कि मुझे यह लिखने की आवश्यकता क्यों पड़ी। यह लिखने के लिये मुझे प्रातःकाल की घटना नेमजबूर किया। जिसे शायद सुनकर मुझे यकीन नहीं हो रहा था। लेकिन फिर भी मुझे उस पर यकीन करना पड़ा क्योंकि वह खुद वो बातें किसी से मोबाइल पर कर रहा था।



और किसी से मना कर रहा था कि मैं आपके पास नहीं जा सकता मुझे भी अपने काम है। मैं यह स्पष्ट रूप से

समझ चुकी थी कि दूसरी ओर से कोई महिला बातचीत कर रही थी और शायद वह रिश्तेदार के पास जाना चाहती थी। इसलिये सचिन के पास फोन किया था कि दोपहर को मुझे रिश्तेदार के पास ले चलना पर उसने मना कर दिया और मुझसे बातें करने लगा लेकिन मैं उसके इस अजीब व्यवहार से आश्चर्यचकित थी और जानना चाहती थी कि आखिर उसने किसे और क्यों मना किया। मैंने उससे पूछा कि किसका फोन था आज तुमने पहली बार किसी को मना किया है। उसने कहा कि किसी का नहीं रहने दीजिये ? लेकिन दोबारा पूछने पर उसने बताया कि (मम्मी) माताजी का फोन था, दोपहर को किसी रिश्तेदार के पास जाना है साथ चलने का कह रही थीं , मना कर दिया , किसी और को लेकर मुझे कही जाना है। ये पंक्ति सुनकर तो जैसे मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना ही नहीं रहा कि ऐसा बालक अपनी माता की सेवा करने से मना रहा है। मैंने उससे उसका कारण जानना चाहा तो उसने जो कारण बताया उसे सुनकर उसके बारे में लिखने की इच्छा हुई।

उसने बताया कि मम्मी को तो मैंने इसलिये मना किया कि बड़ा भईया भी उनको रिश्तेदार के पास ले जा सकता है परन्तु मुझे एक अम्मा को अस्पताल ले जाना है। जिसका कोई नहीं है वो जरूरी है। उसकी यह बात सुनकर मुझे लगा कि न जाने कौन से संस्कार इसकी माँ ने इसके अन्दर पैदा किये हैं, जो स्वयं की माँ की परवाह ना करते हुये पहले दूसरी बूढ़ी माँ की सेवा कर रहा है। मुझे राम प्रसाद बिस्मिल की घटना याद आ गयी कि राम प्रसाद बिस्मिल से उसकी माँ जेल में मिलने पहुँची। माँ को देखते ही राम प्रसाद की आंखों में आंसू आ गये- तो राम प्रसाद की माँ ने डांटते हुये कहा कि अगर मुझे पता होता कि मेरा बेटा इतना

कायर है जो फाँसी के डर से रो रहा है तो मैं पैदा होते ही गला घोट देती। तब राम प्रसाद ने कहा कि “माँ मैं फाँसी के डर से नहीं यह सोच कर रो रहा हूँ कि आपकी सेवा करने का मौका न हीं मिला” । तब राम प्रसाद की माँ ने जो जवाब दिया उसे सबको याद रखना चाहिये। माँ ने कहा कि “तुम एक माँ की नहीं तु करोड़ों माँ की सेवा में अपने प्राणों को न्योछावर कर रहे हो यह मेरे लिये सेवाओं से बढ़कर है। और मुझे गर्व है कि तुने मेरी कोख से जन्म लिया है। ”वही तस्वीर मस्तिष्क में घूमने लगी और मैं उसे देखता रहा कि आज के भौतिकवादी युग में कम ही ऐसे सुशील , सभ्य, संस्कारित बालक होते हैं, जो अपने माता पिता की सेवा करते हैं। और वह भाग्यशाली माता पिता हैं जिसके बालक दूसरे बुजुर्गों की सेवा करते हैं। परमात्मा करे उस बालक को दीर्घायु जीवन के साथ अच्छा स्वास्थ्य दें ताकि वह दूसरों की सहायता करता रहे और जीवन को उज्ज्वल बनाये। यही संस्कार प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को दे। ऐसी आशा है जिससे जीवन का यह बगीचा पुष्पों की सुगंध से महके और उस सुगन्ध से सबका जीवन सुगन्धमय हो सके । जिसका इस संसार में कोई नहीं वह आदमी यह महसूस ना करे कि मेरा कोई नहीं। बल्कि उसे लगे मेरा एक नहीं अनेक हैं।



## कहानी - खोखले चमत्कार



शुभम

संजू की दादी का मन सुबह से ही उखड़ा हुआ था। कारण यह था कि जब वे मंदिर से पूजा कर के लौट रही थीं तो चौराहे पर उन का पैर एक बुझे हुए दीए पर पड़ गया था। पास ही फूल, चावल, काली दाल, काले तिल तथा सिंदूर बिखरा हुआ था। वे डर गईं और अपशकुन मनाती हुई अपने घर आ पहुंचीं, घर पर संजू अकेला बैठा हुआ पढ़ रहा था। उस की मां को बाहर काम था। वे घर से जा चुकी थीं। पिताजी ऑफिस के काम से शहर से बाहर चले गए थे, उन्हें 2 दिन बाद लौटना था। दादी के बड़बड़ाने से संजू चुप न रह सका। वह अपनी दादी से पूछ बैठा, “दादी, क्या बात हुई? क्यों सुबह-सुबह परेशान हो रही हो? अंधविश्वासी दादी ने सोचा, संजू मुझे टोक रहा है, इसलिए वे उसे डांटती हुई फौरन बोलीं, “संजू तू भी कैसी बातें करता है। बड़ा अपशकुन हो गया। किसी ने चौराहे पर टोना-टोटका कर रखा था। उसी में मेरा पैर पड़ गया, उस वक्त से मेरा जी बहुत घबरा रहा है”। संजू बोला, “दादी, अगर ऐसा है तो मैं डाक्टर को बुला लाता हूँ”। पर दादी अकड़ गईं और बोलीं, तेरा भेजा तो नहीं फिर गया कहीं ऐसे टोनेटोटके में डाक्टर को बुलाया जाता है या ओझा को। रहने दे, मैं अपनेआप संभाल लूंगी। वैसे भी आज सारा दिन बुरा निकलेगा। संजू ने उन की बात पर कोई ध्यान न दिया और अपना होमवर्क करने लगा। संजू स्कूल चला गया तो दादी घर पर अकेली रह गईं।

पर दादी का मन बेचैन था। उन्हें लगा कि कहीं किसी के साथ कोई अप्रिय घटना न घट जाए, क्योंकि जब से चौराहे में टोने-टोटके पर उन का पैर पड़ा था, वे अपशकुन की आशंका से कांप रही थीं। तभी कुरियर वाला आया और उन से हस्ताक्षर करवा उन्हें एक लिफाफा थमा कर चला गया। अब तो उन का दिल ही बैठ गया। लिफाफे में एक पत्र था जो अंग्रेजी में था और अंग्रेजी वे जानती नहीं थीं। उन्हें लगा जरूर इस में कोई बुरी खबर होगी इसी डर से उन्होंने वह पत्र किसी से नहीं पढ़वाया। दिन भर परेशान रहीं कि कहीं इस में कोई बुरी खबर न हो। शाम को जब संजू और उस की मां घर लौटे, तब दादी कांपते हाथों से संजू की मां जानकी को पत्र देती हुई बोलीं, “बहू, जरूर कोई बुरी खबर है। अपशकुन तो सुबह ही हो गया था। अब पढ़ो, यह पत्र कहां से आया है और इस में क्या लिखा है। जरूर कोई संकट आने वाला है। हाय! अब क्या होगा?” जानकी ने तार खोल कर पढ़ा लिखा था, बधाई, संजय ने छात्रवृत्ति परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है।

पढ़ कर जानकी खिलखिला उठीं और अपनी सास से बोलीं, “माँ जी, आप बेकार घबरा रही थीं, खबर बुरी नहीं बल्कि अच्छी है, हमारे संजू को छात्रवृत्ति मिलेगी। उस ने जो परीक्षा दी थी, उत्तीर्ण कर ली”। तब दादी का चेहरा देखने लायक था



। किंतु दादी अंधविश्वास पर टिकी रहीं। वे रोज मंदिर जाया करती थीं। एक रोज सुबह-सुबह दादी मंदिर गईं। थाली में नारियल, केला और लड्डू ले गईं। थाली मूर्ति के सामने ही रख दी और आंखें बंद कर के मन ही मन जाप करने लगीं। इसी बीच वहीं पेड़ पर बैठा एक बंदर पेड़ से उतरा और चुपके से केला व लड्डू ले कर पेड़ पर चढ़ गया। दादी ने जब आंखें खोलीं और थाली में से केला व लड्डू गायब पाया तो खुश हो कर अपनेआप से बोलीं, “प्रभु, चमत्कार हो गया। आज आप ने स्वयं ही भोजन ग्रहण कर लिया।” वे खुशी-खुशी मंदिर से घर लौट आईं। घर पर जब उन्हें सब ने खुश देखा तो संजू कहने लगा, “दादी, आज तो लगता है कोई वरदान मिल गया।” दादी प्रसन्न थी, बोलीं, “और नहीं तो क्या।” फिर दादी ने सारा किस्सा कह सुनाया। संजू खिलखिला कर हंस पड़ा तथा यह कहता हुआ बाहर दौड़ गया, “इस मोहल्ले में चोर-उचक्कों की भी कमी नहीं है। फिर पिछले कुछ समय से यहां काफी बंदर आए हुए हैं लगता है प्रसाद कोई बंदर ही ले गया होगा।” सुन कर दादी ने मुंह बिचकाया। फिर सोचने लगीं कि आज शुभ दिन है। आज मेरी मनौती पूरी हुई। मैं चाहती थी कि मेरा बुढ़ापा सुखचैन से बीते। रोज की तरह उस शाम को दादी टहलने निकल गईं। वे पार्क में जाने के लिए सड़क के किनारे चली जा रही थीं। साथ ही सुबह हुए चमत्कार के बारे में सोच रही थीं। तभी एक किशोर स्कूटी सीखता हुआ आया और दादी को धकियाता हुआ आगे बढ़ गया। दादी को पता ही नहीं चला, वे लड़खड़ा कर हाथों के बल सड़क पर जा गिरीं। हड़बड़ाहट में उठ तो गईं, पर घर आते आते उन के दाएं हाथ में सूजन आ गई। वे दर्द के मारे कर हाने लगीं। उन्हें फौरन डाक्टर को दिखाया गया। एक्सरे करने पर पता चला कि कलाई की हड्डी चटक गई है।

एक माह के लिए प्लास्टर बंध गया। दादी ‘हाय मर गई, हाय मर गई’ की दुहाई देती रहीं। संजू चुटकी लेता हुआ दादी से बोला, “दादी, यही है वह चमत्कार, जिस के लिए आप सुबह से ही खुश हो रही थीं। तुम्हारी दोनों बातें गलत निकलीं। इसलिए भविष्य में ऐसे अंधविश्वासों के चक्कर में मत पड़ना।” दादी रोंआसी हो कर बोलीं, “हाँ बेटा, तुम ठीक कहते हो। हम ने तो सारी जिंदगी ही ऐसे भ्रमों में बिता दी पर मैं अब कभी शेष जीवन में इन खोखले चमत्कारों के जाल में नहीं पडूंगी।”





# पुरातन छात्रों के अनुभव

“दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन मेरठ, के एक गौरवान्वित पूर्व छात्र के रूप में , मुझे बी.एड. करने के बाद से अपनी यात्रा पर विचार रखने में बहुत खुशी मि ली है। मेरे पास कॉलेज के दिनों के बहुत सुनहरे और सीख देने वाले लम्हे हैं। वहां के माहौल और शिक्षा ने मेरे जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है , और मैं हमेशा अपने पुराने कॉलेज एवं शिक्षकों का ऋणी रहूँगा।”



प्रियांक शर्मा  
उपनिरीक्षक  
उत्तर प्रदेश पुलिस

“फूलों और पेड़ों से भरी जगह , जहां खुशियां रहती हैं और दुख विदा हो जाता है। इस जगह को दीवान इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज कहा जाता है। शुरुआत से लेकर पाठ्येतर गतिविधियों तक की यादें , जिनका मैं दिन भर पीछा करती थी वे आज भी ताज़ा हैं।”



रश्मि राय  
प्रवक्ता  
केंद्रिय विद्यालय, असम

"दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन मेरठ , ने मेरे जीवन को नयी दिशा देने में मदद की है। वहां की शिक्षा और सभी के साथ मिलकर बिताये हुए समय ने मुझे एक बेहतर व्यक्ति एवं शिक्षक बनाया है।”



प्रियंका शर्मा  
प्रवक्ता  
कृषक इंटर कॉलेज, मवाना, मेरठ

“दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन मेरठ, से बी.एड. में प्राप्त शिक्षा की वजह से मैंने अपने लक्ष्यों को पूरा किया है और एक सफल जीवन का निर्माण किया है। मुझे अपने कॉलेज से प्राप्त नैतिक मूल्यों को मेरे अंदर मजबूती से निरूपित किया है और मेरी पेशेवर दुनिया में एक सशक्त प्रभाव डाला है।”



**मनीष चौधरी**

सहायक अध्यापक

आर्मी पब्लिक स्कूल, मेरठ

“दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन मेरठ, ने नैतिक मूल्यों को मुझमें मजबूती से निरूपित किया है। यहां की समृद्ध सांस्कृतिक गतिविधियों ने मेरे व्यक्तिगत विकास को निखारा है और मेरे सोचने का तरीका परिवर्तित किया है जिससे मैं अपने छात्रों को एक सफल मार्गदर्शन दे सकता हूँ।”



**प्रदीप कुमार कश्यप**

सहायक अध्यापक

संस्कृत महाविद्यालय, मेरठ

“दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन एक अद्भुत संस्थान है जिसमें देखभाल करने वाले शिक्षक बिना किसी भेदभाव के छात्रों को उनके कलात्मक कौशल को बेहतर बनाने में मदद करने और अपने छात्रों को सर्वोत्तम अध्ययन अनुभव प्रदान करने के लिए समर्पित हैं।”



**केवल तेवतिया**

प्रवक्ता

श्री कृष्ण इंटर कॉलेज, बागपत



“मैं व्यक्तिगत रूप से डीआईएमएस में अपने प्रिंसिपल और शिक्षकों की दयालुता और व्यावसायिकता की पुष्टि कर सकता हूँ। मेरे शिक्षकों ने हर पहलू में मेरी मदद की और हर सम्भव तरीके से मुझे समायोजित किया। यह वहाँ के वातावरणकी भावना को बयां करता है , कि इतने वर्षों बाद भी मैं उनके प्रति बहुत आभारी हूँ।”



**नारायण कुमार**  
सहायक अध्यापक  
बेसिक शिक्षा, औरंगाबाद

“दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन की शिक्षा और वातावरण उत्कृष्ट है और हमारे प्रिंसिपल के बहुआयामी व्यक्तित्व ने हम सभी को उत्साहित किया है। मुझे डीआईएमएस और सभी शिक्षकों की याद आती है। उन सभी अद्भुत यादों के लिए धन्यवाद दीवान, जिन्हें मैं हमेशा संजो कर रखूंगा।”



**जितेंद्र कुमार**  
नायाब तहसीलदार  
महोबा

स्टाफ और छात्रों के घनिष्ठ माहौल ने एक ऐसा माहौल तैयार किया जहाँ मुझे मूल्यवान, सुरक्षित और नए अनुभवों के लिए खुला महसूस हुआ। मुझे खुद को खोजने के लिए जगह और समय दिया गया और चुनौतीपूर्ण पाठ्यक्रमों के साथ-साथ शैक्षिक यात्रा जैसी विभिन्न गतिविधियों में मार्गदर्शन किया गया जिससे मुझे नए अनुभव मिले।



**जोगिंदर कुमार**  
सहायक आचार्य  
नवजीवन डिग्री कॉलेज, मवाना, मेरठ



## पुरातन छात्र



अनुराग श्रीवास्तव



प्राची मिश्रा



जयप्रकाश बैंसला



हिमांशु शर्मा



रीना शर्मा



विवेक क्वात्रा



शिवानी वत्स



डॉ. शादब अली



अलकागौतम



सुधीर कुमार



आकांक्षा



लारेंस मैसी







# दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन

NH-58, Bypass Road, Partapur, Meerut - 250103 (U.P.) India

Tel. : +91-121-2440315, 2440375 Fax : +91-121-2440337

Contact No. +91-7055562224

Email : [principalbed@dewaninstitutes.org](mailto:principalbed@dewaninstitutes.org)

Website - [www.dce.dewaninstitutes.com](http://www.dce.dewaninstitutes.com)